MPHIN/79994/2021 www.bullseyesamachar.com

बुल्स आई

वर्ष :- 1 • अंक :- 12 • फरवरी :- 2022 • मूल्य :- 20/- रूपये

अमर जवान ज्योति की लौ का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक ज्योति मे विलय

VISIT…

मासिक पत्रिका
बुल्स आई

RNI: MPHIN/79994/2021
वर्ष-1 अंक-12, फरवरी 2022
पृष्ठ:-32+4, मूल्य : 20/- रुपये

सोमेश तिवारी
संपादक
मो. 9300300002
Email : someshtiwari@yahoo.com

राजेन्द्र देसाई
मुम्बई ब्यूरो प्रमुख
शुभांगीनि बिल्डिंग प्रथम तल, नियर मिलन गारमेंट हब मिलन सबवे सांताक्रुज वेस्ट, मुम्बई-400054 मो. 09970099911

लोकेन्द्र मीना
इंदौर संवाददाता
409, रतनमानी काम्पलेक्स, न्यू पलासिया, इंदौर (मप्र) मो. 9826031141
Email : lokendreverma@gmail.com

उत्कर्ष भार्गव
शिवपुरी संवाददाता
गोविंद नगर झांसी रोड़ शिवपुरी (मप्र)
मो. 8103535455
Email : bhargavavv@gmail.com

गौरव तिवारी
मन्दसौर,समवाददाता
एलआईजी -29 ओल्ड आरटीओ रोड मेघदूत नगर, मंदसौर (मप्र) मो. 9039306299
पिन-458001

सुनील श्रीवास्तव
भिण्ड संवाददाता
मीरा कालोनी वार्ड नं. 21, सुनील दुबे हाउस, जेल रोड, भिण्ड (मप्र) मो. 9425130530
Email : bhindnavbharat@gmail.com

मनीष राज्यवर्धन
छत्तीसगढ़ ब्यूरो
डी-432, द्वितीय तल मोनिका बिल्डकॉन, टैगोर नगर रायपुर (छ.ग.) मो. 9981130300

संपादकीय कार्यालय
ए-38, मन्नीपुरम कॉलोनी, चार इमली, रविशंकर नगर, भोपाल (मप्र)
www.bullseyesamachar.com

(1) राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में विलय ... पेज-3
(2) 75 वर्ष में हम अपनी आंखो ... पेज-5
(3) दो महीने के भीतर परिसीमन ... पेज-7
(4) विश्व में सिद्ध शक्तिपीठ श्री ... पेज-9
(5) जहरीली शराब मामले में ... पेज-12
(6) मुलायम की दूसरी बहू अपर्णा ... पेज-14
(7) हमारा बूथ मजबूत होगा ... पेज-16
(8) केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह ... पेज-18
(9) जीवन का मूल्ये ... पेज-20
(10) शहीदों के सम्मान में रायपुर ... पेज-22
(11) कैलारस चीनी मिल ... पेज-24
(12) तथाता का ... पेज-26
(13) 2023 मे वर्ल्ड कप ... पेज-28
(14) आईपीएल की नीलामी लिस्ट ... पेज-30
(15) साजिद नाडियाडवाला की ... पेज-32

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक योगेश तिवारी द्वारा लेक सिटी ग्राफिक्स, 131, डायनामिक सेन्टर, जोन-1 एम.पी. नगर, भोपाल (मप्र) से मुद्रित एवं ए-38, मन्नीपुरम कालोनी, चार इमली, रविशंकर नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। संपादक : सोमेश तिवारी (विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा)।

संपादकीय

चुनाव का चक्र

चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक दल जिस तरह के हथकंडे अपनाने लगे हैं, धनबल और बाहुबल का इस्तेमाल करने लगे हैं। चुनावी हिंसा की घटनाएं भी लगातार बढ़ती गई हैं। राजनीतिक दलों के लोक-लुभावन वादों के अलावा जाति, धर्म आदि के समीकरण जिस तरह बनाए और फैलाए जाते हैं, उससे सामाजिक समरसता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्रधामंत्री ने एक बार फिर एक राष्ट्र एक चुनाव के सिद्धांत पर बल दिया है। पहले भी कई मौकों पर वे कह चुके हैं कि देश में लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाने चाहिए। अलग-अलग चुनाव होने से धन और समय की बहुत बर्बादी होती है। प्रधानमंत्री के इस सिद्धांत का उपराष्ट्रपति ने भी समर्थन किया है। इस बात से शायद ही कोई इनकार करे कि बार-बार चुनाव होने से न सिर्फ पैसे की काफी बर्बादी होती है, बल्कि चुनाव प्रक्रिया के प्रति मतदाता में उदासीनता भी पैदा होती है। यह एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं मानी जाती।

प्रधानमंत्री ने इस बिंदु का विशेष रूप से उल्लेख किया कि बहुत सारे पढ़े-लिखे शहरी मतदाता मतदान में उत्साह के साथ हिस्सा नहीं लेते। पिछले कुछ सालों से स्थिति कुछ ऐसी बन गई है कि हर साल कहीं न कहीं चुनाव होते हैं। इस तरह देश में हर समय चुनाव का माहौल बना रहता है। जिन राज्यों और केंद्र में एक ही पार्टी की सरकारें हैं या कहीं वह प्रतिपक्षी दल के रूप में है, वहां जब विधानसभा के चुनाव होते हैं तो केंद्र सरकार भी सक्रिय नजर आती है। उसी के अनुसार कई बार फैसले भी करती देखी जाती है। इसी तरह राज्य सरकारें भी लोकसभा चुनाव के समय अपने दल को ध्यान में रख कर सरकारी तंत्र का उपयोग करती हैं। यह अब जैसे स्वीकृत परंपरा का रूप ले चुका है।

लोकतंत्र में चुनाव की अवधि तय होती है। हमारे संविधान में चुनाव को लेकर बहुत स्पष्ट प्रावधान हैं। पांच साल के भीतर चुनाव हो जाना चाहिए, चाहे वह लोकसभा का हो या विधानसभा का। आजादी के शुरुआती कुछ सालों में लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ कराए जाते थे। इससे राजनीतिक दलों को भी फायदा होता था और सरकारी अमले और मतदाता को भी बार-बार चुनाव की गहमागहमी से निजात मिलती थी।

मगर कुछ विधानसभाओं में सरकारें अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाईं और कई बार लोकसभा के भी मध्यावधि चुनाव कराने पड़े, जिसकी वजह से एक साथ चुनाव कराने का चक्र बिगड़ गया। संवैधानिक बाध्यता है कि किसी भी सरकार का कार्यकाल समाप्त होने के बाद किन्हीं स्थितियों में अगर चुनाव संपन्न नहीं कराए जा पाते, तो राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ता है। उसकी अवधि भी छह महीने होती है। इसे लंबे समय तक नहीं बढ़ाया जा सकता। इसलिए लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ कराने में बाधा आती है।

अब चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक दल जिस तरह के हथकंडे अपनाने लगे हैं, धनबल और बाहुबल का इस्तेमाल करने लगे हैं। चुनावी हिंसा की घटनाएं भी लगातार बढ़ती गई हैं। राजनीतिक दलों के लोक-लुभावन वादों के अलावा जाति, धर्म आदि के समीकरण जिस तरह बनाए और फैलाए जाते हैं, उससे सामाजिक समरसता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बार-बार चुनाव कराए जाने से लंबे समय तक सरकारों के कामकाज बाधित रहते हैं, क्योंकि सरकारी अमला चुनाव संपन्न कराने की जिम्मेदारी में जुट जाता है।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में विलय की गई अमर जवान ज्योति की लौ

अब से इंडिया गेट पर ये ज्योति नही दिखाई देगी

अमर जवान ज्योति की स्थापना उन भारतीय सैनिकों की याद में की गई थी जोकि 1971 के भारत-पाक युद्ध में शहीद हुए थे। इस युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को बुरी तरह से हराया था । तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 26 जनवरी 1972 को इसका उद्घाटन किया था।

इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पिछले 50 साल से जल रही थी राष्ट्रीय युद्ध स्मारक (National War Memorial) में अमर जवान ज्योति की लौ को एक साथ विलय कर दिया गया । अमर जवान ज्योति की लौ को एक साथ मिलाने के लिए खास मशाल का इस्तेमाल किया गया। इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति की लौ को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में ज्योति के साथ मिलाने के लिए करीब आधे घंटे की विशेष रस्म निभाई गई। इस सैन्य समारोह की अध्यक्षता एयर मार्शल बलभद्र राधा कृष्ण ने की। इसके बाद से अब इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर ये लौ नहीं दिखाई देगी।

इस को लेकर लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) पीजेएस पन्नू ने कहा कि यह सरकार द्वारा लिया गया एक बहुत अच्छा निर्णय है, स्थानांतरण का सवाल नहीं है, सम्मान वहीं है जहां सैनिकों के नाम लिखे जाते हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक ही एकमात्र स्थान है जहां सैनिकों को सम्मानित किया जाना चाहिए।

वहीं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट करके बताया कि अमर जवान ज्योति के पास सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगेगी। पीएम नरेन्द्र मोदी ने 23 जनवरी को नेताजी की हालोग्राम मूर्ति का अनावरण किया। यह मूर्ति तब तब रहेगी जब तक असली मूर्ति तैयार नहीं हो जाती।

25 फरवरी 2019 में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का पीएम मोदी ने किया था उद्घाटन

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण केंद्र सरकार ने 2019 में किया था। इसे 1947 में देश की आजादी के बाद से अब तक शहादत दे चुके 26, 466 भारतीय जवानों के सम्मान में निर्मित किया गया था। 25 फरवरी 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस स्मारक का उद्घाटन किया था।

विपक्षी नेताओं ने किया विरोध

कांग्रेस समेत कई विपक्षी नेता अमर जवान ज्योति की लौ का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर विलय किए जाने का विरोध कर रहे हैं। कांग्रेस ने कहा कि सरकार का यह कदम सैनिकों के बलिदान के इतिहास को मिटाने की एक कोशिश है ।

नहीं रूक रहा अवैध मिट्टी-कोपरे का खनन, दिनभर दौड़ रहे डंपर

रेहटी तहसील बनी अवैध कारोबार का गढ़

शरण तिवारी

मिट्टी, गिट्टी और कोपरे का अवैध खनन यहां जमकर चल रहा है। सरपट दौड़ते डंपर रेहटी निवासियों के लिए मुसीबत का कारण बन गये हैं। इस तहसील में अवैध मिट्टी, गिट्टी और कोपरे का कारोबार थमने का नाम नहीं ले रहा है। दिनभर अवैध मिट्टी, गिट्टी और कोपरा बिना रायल्टी के ही डंपरों द्वारा सप्लाई किया जा रहा है। नगर की सड़कों सहित आसपास के क्षेत्र में सरपट दौड़ रहे डंपर लोगों के लिए भी मुसीबत का कारण बने हुए हैं। यहां बता दें कि पिछले दिनों तहसीलदार द्वारा अवैध खनन पर कार्रवाई की गई थी। इसमें तीन डंपरों को पकड़कर इन पर जुर्माना भी लगाया गया था। अब यही डंपर फिर से अवैध मिट्टी और कोपरा ढोने के काम में फिर से लग गए हैं।

बुधनी विधानसभा की रेहटी तहसील अवैध कारोबार का गढ़ बन चुकी है। यहां के भाजपा नेताओं सहित अन्य रसूखदार लोगों की कृपादृष्टि से दिनभर अवैध मिट्टी, गिट्टी और कोपरे का कारोबार किया जा रहा है। अवैध कारोबारियों ने जंगलों से भी मिट्टी और कोपरा निकालकर खूब बेचा है। यह काम अब भी किया जा रहा है। पिछले दिनों अवैध खनन की शिकायत पर कार्रवाई की गई तो डंपर मालिकों ने एक-दो दिन काम बंद रखा, लेकिन अब इनका अवैध कारोबार फिर से शुरू हो गया है। मिट्टी, गिट्टी और कोपरे का अवैध कारोबार मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की छवि को भी खराब कर रहा है।

मुख्यमंत्री कई मौकों पर कह चुके हैं कि अवैध काम बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, जबकि उनके विधानसभा क्षेत्र में ही यह अवैध कारोबार जमकर किया जा रहा है।

दिनभर सरपट दौड़ रहे डंपर

रेहटी नगर सहित आसपास के क्षेत्र में अवैध मिट्टी, गिट्टी और कोपरे से भरे हुए डंपर सरपट दौड़ लगा रहे हैं। इस कारण जहां रेहटी क्षेत्र की जनता परेशान है, तो वहीं ग्रामीण क्षेत्रों से निकलने वाले डंपर भी लोगों के लिए परेशानी का कारण बने हुए हैं। ओव्हर लोडिंग ये डंपर जहां सड़कों की सेहत खराब कर रहे हैं, सड़कों में बड़े-बड़े गड्ढे बना रहे हैं तो वहीं इनके कारण वायु प्रदूषण भी फैल रहा है।

कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति

इधर इन अवैध डंपरों पर कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति की जा रही है। खनिज विभाग के पास रेहटी तहसील में चल रहे अवैध खनन की जानकारी है, लेकिन फिर भी इन पर कार्रवाई नहीं की जा रही है। पिछले दिनों रेहटी तहसीलदार द्वारा डंपरों पर कार्रवाई हुई तो इन डंपर मालिकों ने कार्रवाई के बाद ताबड़तोड़ रायल्टी कटवा ली। हालांकि खनिज विभाग द्वारा इस रायल्टी को मान्य नहीं किया गया। अब फिर से ये डंपर अवैध मिट्टी, गिट्टी और कोपरे के कारोबार में लग गए हैं।

75 भारत कहां पर होगा, उस समय भारत की तस्वीर क्या होगी, यह सोचने का काम

वर्ष में हम अपनी आंखों से जिस भारत को देख रहे हैं, 100 वर्ष बाद यह भारत कहां होगाः प्रह्लाद पटेल

दमोह। आजादी के पूरे 75 वर्ष हो चुके हैं यह 75 वर्ष ममूली समय नहीं होता 75 वर्ष में हम अपनी आंखों से जिस भारत को देख रहे हैं, 100 वर्ष बाद यह भारत कहां पर होगा, उस समय भारत की तस्वीर क्या होगी, यह सोचने का काम आने वाली पीढ़ी को अपने कंधों पर उठाना होगा, उसको जिम्मेदारी लेनी होगी कि 100 वर्ष बाद हम अपने आने वाली पीढ़ी को पीने के लिए साफ पानी एवं शुद्ध अक्सीजन दे पाएंगे या नहीं, यह जमीन रहने लायक बचेगी या नहीं, जिम्मेदारियां समय के साथ बढ़ती जाएंगी।

इस आशय के विचार केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं जल शक्ति राज्यमंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने बटियागढ़ तहसील के ग्राम मगरौन स्थित जरारूधाम में आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्वच्छता एवं जल साक्षरता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किये। इस अवसर पर जलपुरूष और रमन मेग्सेसे पुरूस्कार से सम्मानित डॉ राजेन्द्र सिंह का पुष्पगुच्छ और शाल तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया तथा जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अतिथियों को मूमेंटो भेंट किये गये।

केन्द्रीय राज्यमंत्री प्रहलाद पटैल ने कहा जो लोग 20 और 22 साल के हैं उनको लंबा जीवन भविष्य में गुजारना है। आज का दिन सार्थक होगा विवेकानंद जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी, कि हमारे नवजवानो का शरीर और कंधे इतने मजबूत हो कि भारत माता की गुलामी की जंजीरों को भी काटे और एक दिन भारत को विश्व गुरु बना कर दुनिया के सामने प्रस्तुत करें।

उन्होंने कहा प्रधानमंत्री जी ने कहा है यह सफलता नहीं है, यह एक पड़ाव है एक सीढ़ी है । पानी समितियां ही नल जल योजना का संचालन करेंगे और गुणवत्ता की जब बात आती है तो टेस्टिंग के लिए भी 5 माताओं बहनों को चुना गया है।

उन्होंने कहा अगर जल के साथ मर्यादा का पालन नहीं करोगे तो पाषाण का होना तय है, इस कहानी का अर्थ यह है। हर स्रोत की मर्यादा है, क्या उन स्रोतों की हम चिंता करते हैं। वह कुएं बावड़ी, तालाब, सरोवर, नदी एवं नाले यह छोटी चीजें हैं लेकिन इन्हीं सब की मर्यादा हैं । हम जब पहाड़ पर जाकर देखते हैं तो लोग चश्मे से पानी पीते हैं लेकिन उत्तर पूर्व में एक बड़ी चुनौती सामने आई है, यह चश्मे खत्म हो रहे हैं, मैं खुद नागालैंड जाने वाला हूं, जहां चश्मे से पानी पीने वाला वर्ग में अब त्राहि-त्राहि मच रही है। क्योंकि उन्होने उस जगह पर मोटर लगा दी है। उनके पूर्वज नालिया बनाकर चश्मे के पानी को नीचे लाते थे और बाकी परिवार उस पानी को लेकर चला जाता था। लेकिन तकदीर का हंकार देखिए मोटर लगाई तो चश्मा समाप्त हो गया और पूरा गांव समाज एक एक बूंद पानी को तरसने लगा है, यह जो मर्यादाओं का उल्लंघन है। उन्होंने यक्ष की कहानी पर भी विस्तार से जानकारी देते हुये कहा सिर्फ शिक्षा जरूरी नहीं है ज्ञान भी जरूरी है।

उन्होंने कहा दमोह जिले में नदियों के पुनरुत्थान एवं पुनर्जीवन देने के लिए एक क्रमबद्ध अभियान शुरू होगा। जिसमें नौजवान भाई एवं बहन शामिल होंगे इस कार्यक्रम की यही सफलता है, जिससे हम जिले को आदर्श रूप में प्रस्तुत कर सकें। सभी लोग इस बात को मानते हैं चाहे वह नदी जोड़ो अभियान, जल जीवन मिशन, स्वच्छता मिशन एवं ओडीएफ प्लस टू हो यह सारे वहीं क्रम है, जिसके कारण हम बहुत बेहतर तरीके से आगे बढ़ रहे हैं। जल स्रोतों की मैपिंग होने की जो बात कही गई है वाटर बॉडीज की भारत सरकार ने वह अध्यादेश जारी भी किया है, वह नोटिफिकेशन हम सबको लाभ देगा उसके बाद राज्यों की जिम्मेदारी है कि वह उसको कैसे आगे बढ़ाए।

जलपुरूष और मेगसेसे पुरूस्कार से सम्मानित डॉ राजेन्द्र सिंह ने कहा यदि अनुशासन होगा तो दमोह देश में पानी दार बनेगा। पानी का काम करना सीख जाएंगे पहले हमारी आंखों में पानी आना चाहिए हमारी आंखों का पानी सूख गया है जो यह जल संरचना है आज कि हमारी आंखों में

पानी पहले कैसे आए यह समझने की जरूरत हैं। इसलिए मुझे इस मंच से कहते हुए बहुत खुशी हैं जल शक्ति मंत्रालय में एक ऐसे व्यक्ति मंत्री हैं, जो पानी के काम को शुभ का काम मानते हैं, पुण्य का काम मानते हैं, जो पानी को लाभ का काम नहीं मानते।

उन्होंने कहा बुंदेलखण्ड की धरती को हरा भरा करने तीनों काम करने पड़ेंगे, तुम्हारे बुखार के इलाज की दवाई पेरासिटामोल है, धरती के बुखार ठीक करने की दवा हरियाली है। जितना पानी निकाल रहे हैं उतना धरती पर नहीं डाल रहे हैं रिचार्ज से ज्यादा डिस्चार्ज कर रहे हैं जल संरचना का पहला पाठ हम धरती से उतना ही निकाले जितना हम अपने जीवन में डाल सकते हैं यदि हम अपने जीवन के उपयोग से ज्यादा पानी निकालते हैं तो हम अपनी मां के साथ अन्याय कर रहे हैं अपने जीवन के साथ अन्याय कर रहे हैं आज की जल संरचना में दमोह में यदि सचमुच युवा को यह समझ में आ जाए दमोह का जल यदि स्वच्छ होगा तो ही उनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यहां का जल पर्याप्त होगा तो भरपेट खाने को मिलेगा यदि यहां जल सब जगह होगा तो धरती पर हरियाली आएगी

जल को गंदा कर रहा है उसको रोको जो जल का शोषण प्रदूषण जल पर अतिक्रमण कर रहा है उसको रोकना उसको रोकने के लिए जल सत्याग्रह करना होगा यह चार काम हमारी अगली पीढ़ी को करने के लिए जल संरचना की जरूरत है इस जल संरचना के लिए विषय हैं वह जल। उपलब्ध जल का उपयोग जल का प्रबंधन जल का वितरण किसको कितना यह जो सारे विषय हैं यह जल संरचना के विषय हैं । सबसे आखरी जल संरक्षण का विषय है। अपने गांव के जल की ऑडिटिंग और बजट गांव के लोग सीख जाए समझ जाएं।

वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन एवं लॉजिस्टिक के अध्यक्ष राहुल सिंह लोधी ने कहा कि वे केन्द्रीय मंत्री के आभारी हैं, उनके दमोह आगमन से सभी को एक नया काम, जीवन जीने, काम करने एवं सोचने के लिए एक नई दिशा सभी लोगों को देकर जाते हैं। यदि प्रहलाद जी को एक स्कूल कहो या विद्यालय कहो पूरे अनुशासन का तो भी कम हैं। हम सभी को मार्गदर्शन मिल रहा है। दमोह विधायक अजय टंडन ने कहा हम सभी प्रयास नहीं करते। अगर गांव मोहल्ले या जिले के अंदर कोई बड़ी बावड़ी बनी है तो हम सभी इसको साफ करने का प्रयास क्यों नहीं करते हमको भी अपनी भागीदारी निभाना चाहिए, और जब तक हमारी भागीदारी नहीं होगी तब तक सरकार कितना भी पैसा खर्च कर ले, कोई भी प्रयास कर ले हम उसमें सफल नहीं हो पाएंगे। हमें अपनी भागीदारी निभाकर एक मील का नया पत्थर गणना होगा। नदियों में हमारे द्वारा गंदगी को फैलाया जा रहा है गांव के लोग जो नदियों के किनारे रहते हैं यदि वह आगे आ कर उस गंदगी को निकाल कर नष्ट करे, इस प्रकार के प्रदूषण हटाने के लिये हम सभी को आगे आना होगा। उन्होंने कहा आज की कार्यशाला बेहतरीन तरीके से हम सबको कुछ ना कुछ शिक्षा देकर जायेगी। उन्होंने कहा माननीय प्रहलाद पटेल, सभी की ओर से बधाई के पात्र हैं और सबसे ज्यादा बधाई के पात्र डॉक्टर राजेंद्र सिंह हैं ।

उन्होंने स्वच्छता के संबंध में जानकारी देते हुए कहा, खुले में शौच से मुक्त करने के लिए भारतवर्ष को 2 अक्टूबर 2019 से भारत सरकार ने स्वच्छता अभियान चलाया जिसके तहत कचरा उठाने वाली गाड़ियों में गांधी जी का चश्मा बना रहता है कुछ लोगों ने इस बात को लेकर विरोध किया कि गांधी जी का चश्मा यहां पर क्यों लगा है। लेकिन जो जानकारी वाले लोग हैं जिनको इस विषय में पता है, उन्होंने इसका विरोध नहीं किया, और यह कहा कि गांधी जी का चश्मा गांधी जी की आंखें हैं जो स्वच्छता की ओर देखना चाहती थी। इसलिए यह चश्मा इसमें लगाया गया है। गांधीजी का एक सपना था उस सपने को भारत सरकार ने उठाया।

उन्होंने बताया यह कोई राजनीतिक मंच नहीं है अगर होता भी तो जो बात सही है वह कहनी चाहिए और स्वीकार भी करनी पड़ेगी। उन्होंने बताया भारत सरकार 12 हजार रूपये शौचालय बनाने के लिए देती है कि आप खुले में शौच ना करें अपने घर के आस-पास जहां पर भी सही जगह हो वहां पर शौचालय बनाएं। बड़ामलहरा विधायक एवं नागरिक आपूर्ति निगम अध्यक्ष प्रद्युम्न सिंह लोधी ने कहा बड़ा मलहरा में घोरा के पास एक गांव है ।अगरोठा निवासी 20 वर्षीय बबीता लोधी ने गांव की औरतों को इकट्ठा कर पानी की समस्या को हल किया उस लड़की को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मानित किया।

उन्होंने कहा हम सब बुद्धिमान एवं पढ़ने वाले लोग हैं, आज देश में इंदौर स्वच्छता में प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है, स्मार्ट सिटी बन रही है, तो क्या स्मार्ट गांव नहीं बन सकते। क्या हम गांव में सफाई नहीं रख सकते । जबेरा के अनुज बाजपेई के गांव में छोटे-छोटे बच्चे रैली निकालते हैं फेसबुक के माध्यम से देखा जा सकता है। ऐसा कार्य हमें भी अपने गांव में करना चाहिए। उन्होंने राजेंद्र को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई दी और कहा आज बुंदेलखंड के बच्चे भी आपके सामने आए हैं उनके हाथ में पेन और डायरी भी हैं वह आपके कथनों को लिखेंगे भी इसलिए आज युवा दिवस के मौके पर उन्होंने केन्द्रीय राज्यमंत्री पटैल का धन्यवाद ज्ञापित किया ।

जबेरा विधायक धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से स्वच्छता एवं जल साक्षरता पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन आज किया गया और सबसे महत्वपूर्ण विषय है कि आज युवा दिवस भी है आज स्वामी विवेकानंद जी की जयंती भी है, इनकी जयंती पर उनके चरणों मैं उन्होंने कोटि-कोटि नमन किया।

उन्होंने कहा स्वामी जी ने कहा था कि मेरा विश्वास युवा पीढ़ी पर है इन्ही में से मेरे कार्यकर्ता निकल कर आगे आएंगे और विश्व की सारी समस्याओं को सुलझा लेंगे, विश्व की सारी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता युवाओं में है। 1901 में एक युवा हेमचंद्र घोष ने स्वामी जी से धर्म के बारे में चर्चा करनी चाही तो स्वामी जी ने कहा कि गुलाम का कोई धर्म नहीं होता जाओ जाकर पहले अपनी भारत माता को स्वतंत्र करो। वे प्रखर क्रांतिकारी के रूप में सामने आए। वे कहा करते थे कि सारी शक्ति हमारे अंदर है जरूरत तो सिर्फ हमें अपने अंदर के आत्मबल को जगाने की है।

उन्होंने कहा जल संरक्षण की दिशा में अगर हम कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद जी के भारत को साकार करने के सपने में हम महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाएंगे। कांग्रेस जिला अध्यक्ष पंडित मनु मिश्रा ने कार्यशाला में कहा सतधरू परियोजना और सीता नगर की परियोजना शुरू हुई है। इन दोनों परियोजनाओं में लोगों को पानी सीचने एवं पीने के लिए मिलेगा। जल निगम द्वारा गांव-गांव में पाइप लाइन डाली जा रही है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनप्रतिनिधि एवं सरपंचों से से आग्रह करते हुए का हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़कर एवं राजनीतिक चश्मे को उतारकर यह सोचे कि हमारा गांव स्वच्छ कैसे रहेगा पानी की व्यवस्था कैसे होगी। इस बात को पहले प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि नरेन्द्र बजाज, डॉ आलोक गोस्वामी, पूर्व विधायक लखन पटैल सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, अधिकारीगण तथा कॉलेज के छात्र-छात्रायें मौजूद थे। प्रथम चरण में विधायक हटा पीएल तंतवाय और समापन अवसर पर समाजसेवी नरेन्द्र दुबे द्वारा आभार प्रर्दशन तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ आलोक सोनवलकर एवं विपिन चौबे ने किया।

शिवराज सरकार के काले कानून की वजह से नहीं हो सके पंचायत चुनाव

दो महीने के भीतर परिसीमन, रोटेशन और ओबीसी आरक्षण के साथ हो पंचायत चुनाव नही तो कांग्रेस गांव-गांव में आंदोलन करेगी

ओलावृष्टि से हुए नुकसान का तत्काल मुआवजा दे सरकार, 2020 के बाद से किसानों को नहीं मिला है फसल बीमा का फायदाः पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ

भोपाल। मध्यप्रदेश में पिछले 7 साल से पंचायत के चुनाव नहीं हो पा रहे हैं, इसकी मुख्य वजह भारतीय जनता पार्टी सरकार की ओबीसी और आरक्षण विरोधी नीति है। ऑर्डिनेंस के जरिए शिवराज सरकार एक ऐसा काला कानून लेकर आई जिसमें न रोटेशन का पालन किया गया, न परिसीमन का और न आरक्षण का, इसी काले कानून की वजह से चुनाव रद्द हो गए। अगर मध्य प्रदेश की सरकार 2 महीने के भीतर परिसीमन, रोटेशन और ओबीसी आरक्षण के साथ ग्राम पंचायत चुनाव नहीं कराती तो काग्रेस पार्टी जिला स्तर, ब्लॉक स्तर से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक आंदोलन करेगी पूर्व मुख्यमंत्री एवं मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कमलनाथ ने अपने आवास पर आयोजित पत्रकार वार्ता में उक्त बातें कही।

कमलनाथ ने पत्रकार वार्ता में पत्रकारों से सीधा संवाद करते हुए हर विषय पर पूछे गए सवालों का विस्तार से जवाब दिया। पंचायत चुनाव के मुद्दे पर एक सवाल के जवाब में कमलनाथ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में याचिकाकर्ताओं ने परिसीमन और रोटेशन का मुद्दा उठाया था लेकिन जब कोर्ट ने ओबीसी आरक्षण के मुद्दे पर अपना फैसला सुनाया तो वहां मौजूद मध्य प्रदेश सरकार के वकीलों ने कोई आपत्ति नहीं की।

सरकार को तुरंत माननीय उच्चम न्यायालय से अपने आदेश को रीकॉल करने का निवेदन करना चाहिए था, जो नहीं किया गया।अगले दिन ही सरकार को पुनर्विचार याचिका लगानी चाहिए थी जो नहीं लगाई ग इ ं ।

नाथ ने कहा कि यह तो संयोग है कि उस समय विधानसभा का सत्र चल रहा था ,जहां कांग्रेस पार्टी स्थगन प्रस्ताव लेकर आई और उसके बाद सदन ने ओबीसी आरक्षण के साथ चुनाव कराए जाने के बारे में संकल्प पारित किया।

कमलनाथ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का चरित्र पूरी तरह से ओबीसी विरोधी है। शिवराज सिंह चौहान 15 साल से मुख्यमंत्री हैं, भाजपा के तीन मुख्यमंत्री रह चुके हैं, लेकिन क्या कभी भाजपा ने ओबीसी को 27ब आरक्षण देने का प्रस्ताव सदन में रखा। भाजपा सरकार एक कानून बता दे जो उसने ओबीसी के हित में बनाया हो। उन्होंने कहा कि पिछले 2 साल से ओबीसी स्कॉलरशिप का 1210 करोड़ रुपए बकाया है और यह स्कॉलरशिप वितरित नहीं हो पा रही है।

-हाल ही में मध्यप्रदेश में हुई ओलावृष्टि के सवाल पर कमलनाथ ने कहा कि सरकार को तत्काल किसानों को मुआवजा देना चाहिए। खरीफ 2020 में किसानों के फसल बीमा को करने के लिए जिस कंपनी का चयन हुआ उसके साथ राज्य सरकार ने यह अनुबंध किया कि कुल प्राप्त प्रीमियम का 110ब तक ही दावे का भुगतान कंपनी के द्वारा किया जाएगा । वर्ष 2020 खरीफ में प्रीमियम लगभग 3000 करोड रुपए जमा हुआ है तो इसका एक सौ दस परसेंट अर्थात तैंतीस सौ करोड रुपए के दावों का भुगतान भार कंपनी वहन करेगी और इसके ऊपर के दावे की राशि भुगतान का भार सरकार को वहन करना है। खरीफ 2020 में लगभग 7000 करोड रुपए के दावे किसानों ने किए हैं मतलब सरकार को 3700 करोड रुपए का भार वहन करना पड़ेगा और 3300 करोड रुपए के दावे का भुगतान कंपनी करेगी। इस कारण से सरकार द्वारा फसल बीमा के दावों का निराकरण नहीं कराया जा रहा है।

ऐसे में जब 2020 का बीमा अब तक नहीं मिला है तो 2022 में हुए ओला वृष्टि का पैसा 2024 में भी मिल जाए तो बड़ी बात है। सरकार को तुरंत मुआवजे के रूप में किसानों को यह पैसा देना चाहिए और जब बीमे की रकम सरकार को मिल जाए तो वह पैसा उसमें से काटा जा सकता है। लेकिन बीमा के भुगतान में देरी के लिए भी सरकार ही जिम्मेदार है।

➔ उत्तर प्रदेश में होने जा रहे आगामी विधानसभा चुनाव के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में कमलनाथ ने कहा कि कम समय में ही प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश में उत्साह का माहौल पैदा कर दिया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जो चुनाव परिणाम आएंगे, उन पर लोगों को ताज्जुब होगा।

➔ हाल ही में पंजाब में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में हुई कथित लापरवाही के मुद्दे पर पूछे गए सवाल के जवाब में कमलनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा पूरे देश के मान सम्मान का विषय होती है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी इस विषय पर राजनीति करना चाहती है। प्रधानमंत्री की सुरक्षा की पूरी जांच होनी चाहिए, उन्हें समुचित सुरक्षा दी जानी चाहिए। लेकिन उस पर राजनीति करना बहुत ही निंदनीय है।

उत्तर प्रदेश के चुनावी अखाड़े में पहली बार होंगे दो सियासी पहलवान आमने सामने

राजनैतिक महासंग्राम 2022 जनता दरबार में वोटों के लिए क्यों मजबूर हुए मुख्यमंत्री पद के दावेदार भाजपा के किंग मेकर योगी आदित्यनाथ और सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव

पंकज पाराशर छतरपुर

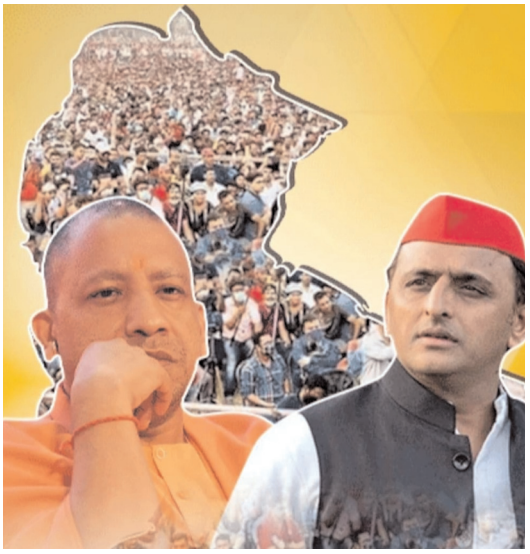

उत्तर प्रदेश के चुनावी अखाड़े में ऐसा पहली बार होगा कि दो सियासी पहलवान आमने सामने होंगे और जनता से वोट मांगने के लिए उनकी मिन्नतें करते हुए मीडिया के जरिये समूचे देश को दिखाई भी देंगे द्य पांच साल पहले यूपी की सत्ता पर काबिज़ होने वाले योगी आदित्यनाथ ने न तो विधानसभा का चुनाव लड़ा था और न ही उससे पहले साल 2012 में सूबे के मुख्यमंत्री बनने वाले अखिलेश यादव ही जनता दरबार में वोट मांगने गए थे द्य अब इसे सियासत की मजबूरी और वक़्त का तकाज़ा नहीं तो और क्या समझा जायेगा कि इस बार दोनों ही जनता की अदालत में खुद को सर्वश्रेष्ठ साबित करने के लिए उनके बीच जाकर वोटों की फरियाद मांग रहे होंगे।

हमारे देश के लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी यही है कि एक बार तो पिछले दरवाजे से कोई नेता सत्ता की मंजिल तक पहुंच सकता है लेकिन दोबारा उसे हासिल करने के लिए उसे जनता के बीच जाना ही पड़ता है, जो सही मायने में उसकी %भाग्य विधाता% होती है द्य दरअसल, अखिलेश यादव और उसके बाद योगी आदित्यनाथ ने यूपी का सिंहासन संभालने के लिए सबसे %शार्ट कट% रास्ता अपनाते हुए प्रदेश की विधान परिषद का सदस्य बनने का सियासी दिमाग चलाया, ताकि चुनाव लड़ने के लिए उन्हें लोगों के बीच जाकर वोटों की भीख न मांगनी पड़े द्य उस लिहाज़ से देखें, तो पिछले एक दशक में ये पहल ऐसा अनूठा चुनाव होगा,जो सूबे के दो दिग्गज नेताओं को लोगों के हरेक वोट की ताकत का भी अहसास करायेगा।

हालांकि योगी आदित्यनाथ हो या अखिलेश,दोनों ने ही अपने लिए सबसे सुरक्षित सीट को चुना है,ताकि चुनाव जीतने में रत्ती भर भी रिस्क न हो. पिछले कई दिनों से सीएम योगी के अयोध्या,मथुरा या फिर काशी की किसी सीट से चुनाव लड़ने की चर्चा सुर्खियों में थी लेकिन उन्होंने अपने लिए चुनी सबसे सुरक्षित गोरखपुर सदर ज़ाहिर है कि वे गोरखपुर से पांच बार लोकसभा सदस्य बन चुके हैं, लिहाज़ा पूरे प्रदेश में उनके लिए अपने इलाके से ज्यादा कोई और जगह सुरक्षित हो ही नहीं सकती थी।

पर, योगी के चुनाव लड़ने का ऐलान करते ही उन्हें टक्कर दे रहे अखिलेश यादव पर भी ये दबाव आ गया कि अब चुनांवी अखाड़े में कूदने के सिवा कोई और चारा नहीं है द्य सो उन्होंने भी खुद के लिए ऐसी सीट चुनी, जो पिछले कई बरसों से मुलायम-परिवार का मजबूत गढ़ मानी जाती है द्य वैसे अगर अखिलेश चाहते तो, वह आजमगढ़ की किसी सीट से भी चुनाव लड़कर अपनी किस्मत आजमा सकते थे लेकिन उन्हें मैनपुरी की करहल विधानसभा सीट ही सबसे ज्यादा रास आई द्य इसकी वजह भी है क्योंकि करहल समाजवादी पार्टी का गढ़ इसलिये भी है क्योंकि यहां यादवों की संख्या सबसे अधिक है, इसलिये ये सीट अखिलेश के लिए बेहद सुरक्षित मानी जा रही है।

दरअसल, करहल विधानसभा सैफई के करीब है, जहां मुलायम सिंह की पुश्तैनी जड़ें हैं और वहां आज भी उनका जबरदस्त प्रभाव है. हालांकि इस सीट पर 2007 से ही समाजवादी पार्टी का कब्जा है द्य साल 2017 के चुनाव में मोदी-योगी की लहर के बावजूद करहल सीट पर सपा ने अपना कब्ज़ा बरकरार रखते हुए कुल पोल वोट का 49. 81 फीसदी वोट हासिल किया था जबकि बीजेपी को 31. 45 फीसदी और बीएसपी ने 14. 18 फीसदी वोट हासिल किए थे। हालांकि इस सीट का चुनावी इतिहास बताता है कि साल 1957 से लेकर अब तक ये सीट जनसंघ,जनता पार्टी या बीजेपी के लिए मुफ़ीद साबित नहीं हुई है द्य यहां से सिर्फ एक बार साल 2002 में ही बीजेपी को जीत नसीब हुई है,न उससे पहले और न ही उसके बाद लेकिन यूपी की राजनीति पर बारीकी से नज़र रखने वाले विश्लेषक मानते हैं कि इस बहाने अखिलेश ने अपने दो मकसद साधे हैंद्य एक तो ये कि खुद के लिए सुरक्षित सीट से चुनाव लड़कर वे बाकी हिस्सों में प्रचार करने के लिए फारिग हो जाएंगे क्योंकि उनकी सीट पर तीसरे चरण में मतदान होना है जबकि वहीं सीएम योगी की सीट पर छठें चरण में वोट डाले जाएंगे द्य इसलिये अखिलेश तीसरे चरण में ही मुक्त होकर पूर्वांचल में अपनी पूरी ताकत झोकेंगें द्य दूसरी बड़ी वजह ये भी है कि अगर वे खुद के लिए सेफ सीट न तलाशते, तो खुद अपने ही चुनाव-प्रचार के लिए वक्त देना पड़ता. ऐसी सूरत में दूसरे इलाकों की अनदेखी हो सकती थी द्य उस लिहाज से भी अखिलेश के इस फैसले को सियासी कसौटी पर सही माना जा रहा है।

चूंकि गोरखपुर भी पूर्वांचल का ही हिस्सा है,जहां से पिछली बार बीजेपी को झोली भरकर सीटें मिली थीं द्य लेकिन इस बार बीजेपी को अपने लिए जमीनी हालात उतने अनुकूल नहीं दिख रहे हैं क्योंकि अखिलेश ने भी वहां पूरा दमखम लगाते हुए अपने पुराने वोट बैंक को फिर से साथ जोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी है द्य क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन होने और स्वामी प्रसाद मौर्य जैसे नेताओं साथ एआ जाने के बाद उनके हौंसले और भी बुलंद हुए हैं द्य यही वजह है कि बीजेपी नेतृत्व ने योगी आदित्यनाथ को अयोध्या, मथुरा या काशी से लड़ाने का फैसला लेने की गलती नहीं की क्योंकि इन सीटों से तो बीजेपी के नाम पर कोई भी उम्मीदवार जीत जाएगा. लेकिन रणनीति यही बनाई गई कि अगर योगी अपने गढ़ यानी गोरखपुर से ही चुनाव लड़ेंगे,तो उसका प्रभाव आसपास की तकरीबन तीन दर्जन सीटों पर पड़ेगा।

विश्व में सिद्ध शक्तिपीठ श्री कालीमठ मंदिर जहां मौजूद देवी काली के पैरों के निशानमां काली शनि ग्रह को संचालित करने वाली देवी

देवभूमि उत्तराखंड देवताओं के रहस्यों से सराबोर

पंकज पाराशर छतरपुर

यूं तो देश के कई मदिरों में अनेक चमत्कार देखने को मिलते हैं। लेकिन, देवों की भूमि यानि देवभूमि उत्तराखंड देवताओं के कई रहस्यों से सराबोर हैं। इन्ही चमत्कारों और देव रहस्यों के बीच देवभूमि उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के केदारनाथ की चोटियों से घिरा हिमालय में सरस्वती नदी के किनारे स्थित प्रसिद्ध शक्ति सिद्धपीठ श्री कालीमठ मंदिर स्थित है द्य यह मंदिर समुन्द्रतल से 1463 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है द्य कालीमठ मंदिर रुद्रप्रयाग जिले के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है एवम् इस मंदिर को भारत के प्रमुख सिद्ध शक्ति पीठों में से एक माना जाता है । कालीमठ मंदिर हिंदू देवी काली को समर्पित है। कालीमठ मंदिर तन्त्र व साधनात्मक दृष्टिकोण से यह स्थान कामख्या व ज्वालामुखी के सामान अत्यंत ही उच्च कोटि का है।

देवी काली के पैरों के निशान

स्कन्दपुराण के अंतर्गत केदारनाथ के 62 अध्धाय में मां काली के इस मंदिर का वर्णन है द्य कालीमठ मंदिर से 8 किलोमीटर की खड़ी ऊंचाई पर स्थित दिव्य चट्टान को 'काली शिला' के रूप में जाना जाता है, जहां देवी काली के पैरों के निशान मौजूद हैं और कालीशीला के बारे में यह विश्वास है कि मां दुर्गा ने शुम्भ, निशुम्भ और रक्तबीज दानव का वध करने के लिए कालीशीला में 12 वर्ष की बालिका के रूप में प्रकट हुयी थी द्य कालीशीला में देवी देवता के 64 यन्त्र है, मां दुर्गा को इन्ही 64 यंत्रो से शक्ति मिली थी द्य कहते है कि इस स्थान पर 64 योगनिया विचरण करती रहती हैं द्य मान्यता है कि इस स्थान पर शुंभ निशुंभ दैत्यों से परेशान देवी देवताओं ने मां भगवती की तपस्या की थी। तब मां प्रकट हुई और असुरों के आतंक के बारे में सुनकर मां का शरीर क्रोध से काला पड़ गया और उन्होंने विकराल रूप धारण कर युद्ध में दोनों दैत्यों का संहार कर दिया।

इस मंदिर में कोई मूर्ति नही

कालीमठ मंदिर के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसमें कोई मूर्ति नहीं है, मंदिर के अन्दर भक्त कुंडी की पूजा करते है, यह कुंड रजतपट श्री यन्त्र से ढका रहता है । केवल पूरे वर्ष में शारदे नवरात्री में अष्ट नवमी के दिन इस कुंड को खोला जाता है और दिव्य देवी को बाहर ले जाया जाता है और पूजा भी केवल मध्यरात्रि में ही की जाती है, तब केवल मुख्य पुजारी ही मौजूद होते हैं।

सबसे ताकतवर मंदिरों में से एक

कालीमठ मंदिर सबसे ताकतवर मंदिरों में से एक है, जिसमें शक्ति की शक्ति है7 यह केवल ऐसी जगह है जहां देवी माता काली अपनी बहनों माता लक्ष्मी और मां सरस्वती के साथ स्थित है। कालीमठ में महाकाली, श्री महालक्ष्मी और श्री महासरस्वती के तीन भव्य मंदिर है।

दुर्गासप्तशती के वैकृति रहस्य के अनुसार

इन मंदिरों का निर्माण उसी विधान से संपन्न है जैसा की दुर्गासप्तशती के वैकृति रहस्य में बताया है अर्थात बीच में महालक्ष्मी, दक्षिण भाग में महाकाली और वाम भाग में महासरस्वती की पूजा होनी चाहिए । स्थानीय निवासीओं के अनुसार, यह भी किवदंती है कि माता सती ने पार्वती के रूप में दूसरा जन्म इसी शिलाखंड में लिया था। वहीं,

कालीमठ मंदिर के समीप मां ने रक्तबीज का वध किया था । उसका रक्त जमीन पर न पड़े, इसलिए महाकाली ने मुंह फैलाकर उसके रक्त को चाटना शुरू किया। रक्तबीज शिला नदी किनारे आज भी स्थित है । इस शिला पर माता ने उसका सिर रखा था । रक्तबीज शीला वर्तमान समय में आज भी मंदिर के निकट नदी के किनारे स्थित है।

कालीमठ मंदिर की मान्यता

कालीमठ मंदिर के बारे में यह मान्यता है कि सच्चे मन से मांगी गयी मनोकामना या मुराद जरुर पूरी होती है। इस मंदिर में एक अखंड ज्योति निरंतर जली रहती है एवम् कालीमठ मंदिर पर रक्तशिला, मातंगशिला व चंद्रशिला स्थित हैं। कालीमठ मंदिर में दानवों का वध करने के बाद मां काली मंदिर के स्थान पर अंतर्ध्यान हो गयी, जिसके बाद से कालीमठ में मां काली की पूजा की जाती है। कालीमठ मंदिर की पुनर्स्थापना शंकराचार्य जी ने की थी द्य

शीला से हर साल निकलता है रक्त

मंदिर के नदी के किनारे स्थित कालीशीला के बारे में यह मान्यता है कि कालीमठ में मां काली ने जिस शीला पर दानव रक्तबीज का वध किया, उस शीला से हर साल दशहरा के दिन वर्तमान समय में भी रक्त यानी खून निकलता है द्य यह भी माना जाता है कि मां काली शिम्भ, निशुम्भ और रक्तबीज का वध करने के बाद भी शांत नहीं हुई, तो भगवान शिव मां काली के चरणों के नीचे लेट गए थे, जैसे ही मां काली ने भगवान शिवजी के सीने में पैर रखा, तो मां काली का क्रोध शांत हो गया और वह इस कुंड में अंतर्ध्यान हो गई, माना जाता है कि मां काली इस कुंड में समाई हुई है और कालीमठ मंदिर में शिवशक्ति भी स्थापित है।

क्वालिटी पावर सप्लाय ही मप्र शासन की प्राथमिकता: प्रद्युम्न सिंह तोमर

गांवों मे मीटरीकरण पर ध्यान, शिकायतों का समय पर निराकरण हो

इंदौर /सोमेश तिवारी

प्रदेश सरकार गरीबों, आम लोगों, किसानों व जन जन के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। ऊर्जा विभाग की पहली प्राथमिकता क्वालिटी पावर सप्लाय है, इस पर लाइनमैन से लेकर ऊर्जामंत्री तक को ध्यान देगा होगा। सतत स्थिति में सुधार करना होगा। गांवों में मीटरीकरण पर ज्यादा ध्यान देना होगा, जहां से भी शिकायते मिलती है, वहां समय पर कार्रवाई करना होगी, इसी से उपभोक्ता व आमजन संतुष्ट रहेगा, विभाग की छवि में निखार आएगा।

मप्र के ऊर्जामंत्री ने ली इंदौर में समीक्षा बैठक

प्रदेश के ऊर्जामंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह बात कही। वे मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सभागार में समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि ट्रिपिंग में कमी लाई जाए, ट्रांसफार्मरों का फेल रेट घटाया जाए, क्वालिटी सप्लाय हो, ताकि शिकायतों की संख्या घटे, इंदौर और उज्जैन का प्रति यूनिट नकद राजस्व संग्रहण (सीआरपीयू) और बढ़ाया जाए। ऊर्जामंत्री ने कहा कि देपालपुर के अलवासा, खेड़ी खंडवा, टकरावदा उज्जैन, जसंदी बुरहानपुर आदि में कृषि फीडरों में सुधार की तुरंत जरूरत है।

ऊर्जामंत्री तोमर ने कहा कि जहां भी ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाने की स्थिति मिलती है, वहां तुरंत परीक्षण कर क्षमता बढ़ाना चाहिए, नहीं तो ट्रिपिंग, यूनिट लास एवं उपभोक्ता शिकायतें बढ़ेगी, नुकसान बिजली कंपनी का ही होगा। उन्होंने कहा कि शीतकाल एवं कोराना नियंत्रण के बाद वे जन चौपाल लगाकर उपभोक्ताओं, आमजनों की समस्याएं सुनेंगे, समय पर निराकरण कराएंगे। ऊर्जामंत्री ने इंदौर के बाहर के सभी अधीक्षण यंत्रियों से वीडियो कान्फ्रेंस से बात की व आउट सोर्स कर्मचारियों को समय पर वेतन दिलाने के लिए निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जो आउट सोर्स कंपनी समय पर वेतन नहीं दे रही है, उनके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए। जिन गांवों में पहले मीटरीकरण हुआ है, वहां मीटर रीडिंग के ही बिल जारी हो, यदि नहीं तो मामले की जांच कराए।

हेल्प डेस्क की मामले जल्द सुलझाएं

ऊर्जामंत्री ने निर्देश दिए कि भोपाल में ऊर्जामंत्री हेल्प डेस्क पर जो भी शिकायतें आती है। उनका जल्दी निराकरण कराया जाए, ताकि आमजन को राह मिल सके। इस डेस्क पर पश्चिम क्षेत्र की नौ माह में 9 सौ शिकायतें पहुंची थी, जिनका समाधान हुआ है। जारी माह जनवरी में दर्ज शिकायतें के तेजी से समाधान के निर्देश दिए गए।

पश्चिम क्षेत्र की स्थिति बेहतर

मप्रपक्षेविविकं के प्रबंध निदेशक अमित तोमर ने इस मौके पर कहा कि एक वर्ष में ट्रांसफार्मर का फेल रेट दस फीसदी घटा है, यह पहले 4.62 फीसदी थी, अब 4.10 फीसदी ही है। उन्होंने लाइन लॉस घटाने, राजस्व बढ़ाने, शिकायतों के तेजी से समाधान और अन्य कार्यों मे मिली सफलता की जानकारी दी। ऊर्जामंत्री ने कहा कि पश्चिम क्षेत्र की स्थिति अन्य से बेहतर है। इस अवसर पर मुख्यमहाप्रबंधक रिंकेश कुमार वैश्य, वरिष्ठ अधिकारीगण मनोज झंवर, संजय मोहासे, गजरा मेहता, एसएल करवाड़िया, कैलाश शिवा, पुनीत दुबे शहर अधीक्षण यंत्री मनोज शर्मा, ग्रामीण अधीक्षण यंत्री डीएन शर्मा आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

पुलिस अधीक्षक ने खुद मैदान में उतरकर पकड़े रेत व गिट्टी के 42 ट्रक, 36 पर नहीं निकली रॉयल्टी

फिर खुली माईनिंग और पुलिस थानों की पोल

चैकिंग नहीं होती तो आसानी से ठिकानों पर पहुंच जाती रेत, कार्रवाई से माफिया में हड़कंप

भिंड/सुनील श्रीवास्तव

भिण्ड। रेत माफिया माईनिंग विभाग और थाना प्रभारियों की पोल एक बार फिर से खुलकर सामने आ गई है। देर रात पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान ने खुद मैदान में उतरकर मोर्चा संभाला और एनएच-719 से अवैध रूप से रेत ले जा रहे 42 ट्रकों को पकड़ा। कार्रवाई के दौरान 36 ट्रकों पर रॉयल्टी नहीं पाई गई। अंदाजा लगाया जा सकता है कि शासन को हर रोज लाखों का चूना लगाया जा रहा है।

पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान को लगातार अवैध परिवहन की सूचना मिल रही थी। सोमवार की देर रात फूप थाना पहुंच गए। यहां उन्होंने हाईवे पर स्थित बीएसटी धर्मकांटा के पास खड़े होकर रेत और गिट्टी लेकर आने वाले वाहनों की चेकिंग शुरू कर दी। पुलिस अधीक्षक ने खुद 42 वाहनों को पकड़ा। खनिज विभाग द्वारा की गई जांच में 36 ट्रकों पर रॉयल्टी की रसीद नहीं थी। ज्यादातर ओवरलोड भी थे। पुलिस की इस कार्रवाई से माफिया में हड़कंप मचा हुआ है। सफेदपोश कई रेत माफिया रात को ही फूप थाने पर पहुंचना शुरू हो गए, लेकिन एसपी को देख उल्टे पांव खिसक आए।बताया जा रहा है कि सोमवार को पुलिस अधीक्षक देर रात ग्वालियर से लौट रहें थे इसी दौरान उन्हें रेत और गिट्टी से भरे ट्रक फर्राटे भरते नजर आए।

आवास पर जाने की बजाय वे सीधे भिंड-इटावा की सीमा के नजदीक बरही के पास बीएसटी धर्मकांटा पर पहुंच गए। यहां उन्होंने रात को डेढ़ बजे हाइवे पर चेकिंग शुरू कर दी। इस दौरान वाहनों की लंबी कतार लग गई। इस दौरान उन्होंने वाहनों को पकड़ा और वाहन चालकों को भी धर्मकांटा के अंदर बैठा दिया ताकि वे सूचना को लीक न कर पाएं। कार्रवाई के दौरान कुछ वाहन चालकों ने चकमा देकर भागना चाहा। परंतु फूप थाना पुलिस ने उन्हें दबोच लिया। इस दौरान फूफ थाना टीआइ उपेंद्र छारी को कार्रवाई के लिए बुला लिया गया। रात डेढ़ बजे से शुरू की गई यह कारवाई सुबह साढ़े तीन बजे तक चली। पुलिस की चेकिंग शुरू होने की सूचना पर भिंड की ओर से आने वाले रेत व गिट्टी के ट्रकों का आना थम गया।

इसके बाद खनिज विभाग अफसर राकेश देशमुख को मौके पर बुलाया गया और माइनिंग को जांच करने के लिए निर्देशित किया गया। भिंड से यूपी सीमा में जाने वाले 42 में से 36 ट्रक बिना रॉयल्टी के पाए गए। 28 ट्रकों में रेत भरा था। जबकि 14 में गिट्टी थी। बताया गया है कि पकड़े गए ट्रकों में से 25 रेत व 11 गिट्टी का अवैध परिवहन करके रॉयल्टी चोरी करके ले जा रहे थे। जिला प्रशासन की ओर से इन सभी ट्रकों को जब्त करके कार्रवाई की गई है। अनुमान के अनुसार प्रति दिन जिले से पाच सैकड़ा से अधिक वाहनों से रेत और गिट्टी का अवैध परिवहन हो रहा है। इससे शासन को लाखों का चूना लग रहा है। उप्र प्रशासन कार्रवाई कर चार करोड़ से अधिक का जुर्माना बीते दो साल में वसूल चुका है। भिण्ड की सीमा में पहले बार बड़ी कार्रवाई हुई है।

कार्रवाई के 20 मिनट बाद ही घनघनाने लगे चालकों के मोबाइल

यहां बता दें, फूफ में बीएसटी धर्मकांटे को रेत और गिट्टी के वाहन चालक सुरक्षित ठिकाना मानते हैं। रात में एसपी ने कार्रवाई शुरू की तो रेत और गिट्टी से भरे वाहनों को चालकों ने खुद ही धर्मकांटे पर और पास में सिंह ढाबे पर खड़ा करना शुरू कर दिया। किसी भी चालक को यह भरोसा नहीं था कि धर्मकांटे पर खड़े होकर ही एसपी शैलेंद्र सिंह चौहान कार्रवाई करवा रहे हैं। किसी पुलिस अधीक्षक द्वारा की गई यह पहली बड़ी कार्रवाई है। एसपी चौहान ने ट्रकों को पकड़े जाने के बाद सभी चालकों को धर्मकांटे के अंदर बैठाया। पुलिस के जवानों ने ट्रक चालकों के मोबाइल भी जब्त किए। इस दौरान अधिकांश चालक के मोबाइल पर फोन आए । फोन कर्ता एसपी द्वारा की जाने वाली कार्रवाई की सूचना दे रहा था । पुलिस जवानों ने फोन रिसीव किया तो फोन कर्ता बोले- वाहन कही खड़ा कर दो फूप के पास एसपी चेकिंग कर रहे हैं।

इन्होंने कहा...

रात के समय 42 ट्रकों को पकड़ा गया था। इन में रेत के 28 ट्रक थे शेष गिट्टी से भरे थे। खनिज विभाग को यह ट्रक सौंप दिए है। जांच के बाद वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। रेत का अवैध खनन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जो भी थाना प्रभारी लिप्त पाया जाता है उस पर कार्रवाई की जाएगी।

– शैलेंद्र सिंह चौहान
पुलिस अधीक्षक भिण्ड

जहरीली शराब मामले में एसपी शैलेंद्र सिंह चौहान ने तुरंत लिया एक्शन

जिले में कदम रखते ही एसपी ने की ताबड़तोड़ कार्रवाई, अब तक कई नशा तस्करों को भेज दिया जेल

भिंड/सुनील श्रीवास्तव

भिण्ड जिले में हुए जहरीली शराब कांड के 6 आरोपी पुलिस के हाथ लगे हैं जिनसे पूरे मामले की पूछताछ की जा रही है और जो भी जांच के दौरान जहरीली अवैध शराब में लिप्त पाया गया उस पर कड़ी कार्रवाई की जायेगी। यह बात पुलिस अधीक्षक ने कही। ज्ञात हो कि पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान ने विगत 4 माह दिसंबर को जिले की कमान संभाली थी और आते ही सबसे पहले उन्होंने जिले में नशा का कारोबार करने वाले माफियाओं पर ताबड़तोड़ कार्रवाई शुरू की ताकि जिले में नशे से किसी को किसी तरह का नुकसान न हो।

एसपी के सख्त पुलसिंग के चलते सभी थानेदार अवैध शराब व नशा पर कार्रवाई करने में जुटे हुए हैं, फिर चाहे वह अवैध शराब मंत्री के क्षेत्र में हो या किसी बड़े नेता के सभी इलाकों में जबरदस्त कार्रवाई उनके आते ही की जा रही है। बड़ी मात्रा में अवैध शराब की फैक्ट्री, गांजा, स्मैक पकड़ने की कार्रवाई को अंजाम दिया। जिले में चार लोगों की जहरीली शराब पीने से मौत हो गई। इसको लेकर अबकारी विभाग को सख्त होना चाहिए था लेकिन उनके ढिलमुल रवैये के चलते चार लोगों की जान चली गई। जिले में जहरीली शराब से हुई मौतों की सूचना जैसे ही एसपी को मिली तो तुरंत मामले को गंभीरता से लिया।

जहां से शराब बनना शुरू हुई जहां तक सेवन से हुई मौत के मामले में तुरंत दो थानेदार सस्पेंड कर दिए और पांच जवान निलंबित किए। मृतक परिजनों के बीच कलेक्टर एसपी दोनो लोग पहुंचे और परिजनों से कहा कि दोषियों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

24 घण्टे अपराधो को लेकर एसपी रहते हैं सजग

जिले में अवैध शराब को लेकर अबतक जो एसपी ने जो करवाही की जहां कोई वो वाकई काबिलेतारीफ है । हर दिन नए नए खुलासे किए गए ।अपराधियों पर कार्रवाई के अलावा पुलिस विभाग में लापरवाही बरतने वालों को भी नहीं छोड़ा। जवान से लेकर थानेदारों को भी नहीं छोड़ा।

शराब की काली कमाई से बनाया गया मकान,प्रशासन ने किया ध्वस्त आरोपी धर्मवीर का निर्माणाधीन मकान तोड़ा

भिण्ड जहरीली शराब कांड में हुई चार लोगों के मामले में पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है जिसमें से आरोपी धर्मवीरसिंह बघेल अवैध शराब के कारोबार से शहर के स्वतंत्र नगर में मकान बनाया जा रहा था, जिसकी पुलिस प्रशासन ने जांच पड़ताल की तो उसमें किसी तरह के वैध दस्तावेज नहीं मिले। बिना एनओसी सहित अन्य कागजात के बिना ही अवैध शराब की कमाई से मकान का निर्माण कराया जा रहा था। पुलिस अधीक्षक रविवार दोपहर जाकर पुलिस फोर्स के साथ जेसीबी लेकर मौके पर पहुंचे और निर्माणाधीन मकान को जमीदोज कर दिया। इस अवसर भिंड एसडीएम एवं नगर पुलिस अधीक्षक, तहसीलदार, सीएमओ नगर पालिका भिंड सहित वरिष्ठ अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

इनका कहना है

जहरीली शराब से हुई मौत के मामले में 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है और शेष जांच पड़ताल जारी है जो भी दोषी मिलेगा किसी को नहीं छोड़ूंगा –

शैलेन्द्र सिंह चौहान,
एसपी भिण्ड

सिंधिया को हराकर सुर्खियों में आये सांसद केपी यादव का छलका दर्द लिखा: सिंधिया समर्थक करते है मेरी उपेक्षा

उत्कर्ष भार्गव

शिवपुरी। 2019 लोकसभा चुनाव में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को हरा कर सुर्खियों में आने वाले सांसद केपी यादव ने बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रसाद नड्डा और लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को पत्र लिख कर अपनी पीड़ा व्यक्त की है। उन्होंने यह पत्र 5 दिसंबर 2021 में लिखा था , जो अब इंटरनेट पर वायरल हो रहा है उन्होंने पत्र में स्वयं की उपेक्षा और दरकिनार किए जाने की बात कही है। उन्होंने ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके समर्थकों पर आरोप लगाए है कि उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रम और बैठकों में बीजेपी के निष्ठावान नेताओं को नहीं बुलाया जाता। उन्होंने यह भी आरोप लगाए की सिंधिया समर्थक क्षेत्र में पार्टी का माहौल खराब कर गुटबाजी कर रहे हैं। सांसद केपी यादव की यह चिट्ठी वायरल होने के बाद प्रदेश की राजनीति में बवाल मच गया है।

कार्यक्रमों में मुझे नहीं बुलाया जाता है-

बीजेपी सांसद ने अपने पत्र में लिखा कि हमारी पार्टी विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। हमारे लिए यह गर्व और गौरव की बात है, लेकिन पिछले कुछ समय से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक मंत्री और कार्यकर्ताओं द्वारा पार्टी के सिद्धांतों के विप ?रीत परंपराओं का प्रचलन शुरू किया गया है। केपी यादव ने पत्र में शिकायत करते हुए लिखा कि सांसद होने के बावजूद मेरे क्षेत्र के कार्यक्रमों में मुझे नहीं बुलाया जाता। मेरे ही क्षेत्र के शिलालेखों में सांसद होने के नाते ना मेरा नाम लिखा जाता और ना मुझे बुलाया जाता। यादव ने लिखा कि इस स्थिति को काबू में नहीं किया गया तो बीजेपी को नुकसान होगा और व्यक्तिगत निष्ठा को तवज्जो मिलने लगेगी।

सिंधिया को हराकर आए थे सुर्खियों में

केपी यादव 2019 लोकसभा चुनाव के दौरान सुर्खियों में आए थे. उन्होंने कांग्रेस की सबसे मजबूत सीटों में से एक गुना शिवपुरी लोकसभा सीट पर उस समय कांग्रेस के कद्दावर नेता रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया को हराया था. हालांकि 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने कई समर्थक मंत्रियों और नेताओं के साथ भारतीय जनता पार्टी में आ गए. सिंधिया के साथ भाजपा में आए नेताओं को शिवराज सरकार में महत्वपूर्ण विभागों का मंत्री तो बनाया ही गया, इसके साथ ही कई अन्य कार्यकर्ताओं और नेताओं को संगठन में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई।

महिलाए किसी भी धर्म की हो हमारे लिए पूजनीय: डॉ. मिश्रा

मुस्लिम महिलाओं के अपमान पर प्रदेश के गृह मंत्री सख्त

भीपाल। मुस्लिम महिलाओं को लेकर आपत्तिजनक कंटेंट डालने वाले बुल्ली बाई ऐप को लेकर प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने भी सख्त चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि हालांकि यह ऐप बंद कर दिया है लेकिन उसके बाद भी कोई शिकायत मिलती है तो हम भी कड़ी कार्यवाही करेंगे। गृह मंत्री डॉ.मिश्रा ने कहा कि हमारे लिए नारी पूज्य है । वह किसी भी धर्म , समाज की हो सदा सम्मानीय है । बुल्ली बाई ऐप को लेकर जानकारी मिली है कि उसने मुस्लिम महिलाओं को लेकर आपत्तिजनक कंटेंट डाले गए थे । इसकी शिकायत मिलते ही केंद्र की मोदी सरकार ने इस ऐप को बेन कर दिया। जिन लोगो ने भी यह हरकत की है उनके खिलाफ केंद और अन्य राज्य कार्यवाही कार रहे है इसको लेकर कोई शिकायत मिलती है तो मध्य प्रदेश पुलिस भी कड़ी कार्यवाही करेगी। डॉ. मिश्रा ने कहा कि साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की इस तरह की कोशिश स्वीकार्य नही है जो भी ऐसा करेगा उसे सजा भुगतनी होगी। प्रधानमंत्री मोदी जी और बीजेपी के लिए महिलाओ का संम्मान सबसे पहले है चाहे वह किसी भी धर्म की हो यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने मुस्लिम महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के लिए ट्रिपल तलाक खत्म करने कानून लागू किया।मुस्लिम महिलाओं को आत्मनिर्भर व शिक्षित करने केंद्र व प्रदेश की शिवराज सरकार कई योजनाएं भी चला रही है। गृह मंत्री ने उन लोगो को चेतावनी दी हैं जो महिलाओ के सम्मान के खिलाफ सोशल मीडिया को टूल की तरह उपयोग कर रहे है। प्रदेश में ऐसा काम अगर कोई करेगा तो उसकी जगह जेल में होगी।

मुलायम की दूसरी बहू अपर्णा भाजपा मे शामिल

समाजवादी पार्टी में पारिवारिक जंग देखने के बाद अब सियासी जंग तेज होती हुई दिख रही है. वहीं कलह के बाद अखिलेश और मुलायम फिर से पार्टी में सक्रिय दिख रहे हैं। आइए, हम जानते हैं मुलायम के बेटे प्रतीक यादव की पत्नी अपर्णा यादव के बारे में अपर्णा यादव का पूरा नाम अपर्णा सिंह बिष्ट है. उनके पिता टाइम्स ऑफ इंडिया, लखनऊ ब्यूरो में चीफ एडिटर हैं. अपर्णा ने अपनी स्कूलिंग लखनऊ में की है. इनके स्कूल में मुलायम के बेटे प्रतीक भी पढ़ा करते थे, जहां से दोनों में दोस्ती हो गई।

लखनऊ में स्कूलिंग के बाद अपर्णा अपनी आगे की पढ़ाई के लिए इग्लैंड चली गईं, जहां उन्होंने मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के विषय में मास्टर डिग्री की. वहीं प्रतीक ने लीड्स यूनिवर्सिटी से एमएससी इन मैनेजमेंट की डिग्री पूरी की. दोनों अपनी पढ़ाई की वजह से काफी दिनों तक दूर रहे. इस अरसे के दौरान उनकी बातें सोशल मीडिया पर ही होती थी।

जिस दौरान इनकी दोस्ती हुई थी उस वक्त किसी को ये नहीं मालूम था कि प्रतीक मुलायम के बेटे हैं. मुलायम ने 2007 में अपनी दूसरी पत्नी साधना गुप्ता और प्रतीक को

सार्वजनिक रूप से अपनाया था. इससे पहले अपर्णा की नजर में प्रतीक एक साधारण लड़का था. स्कूल के बाद दोनों की दोस्ती गहरी हुई और दोनों एक-दूसरे को डेट करने लगे।

अपर्णा के पिता को ये रिश्ता मंजूर नही था। जब अपर्णा के पिता को पता चला कि प्रतीक मुलायम की दूसरी पत्नी के बेटे हैं, जिस रिश्ते को उन्होंने इतने सालों तक छुपाकर रखा तो उन्होंने इस रिश्ते को लेकर कड़ा एतराज जताया. उनके मुताबिक प्रतीक को मुलायम अखिलेश जैसा दर्जा कभी नहीं दे सकते, इसलिए उन्होंने प्रतीक को अपनी बेटी से अलग रहने की हिदायत दी, लेकिन बाद में मुलायम के मनाने पर उनके पिता राजी हो गए। अपर्णा ने शादी के बाद राजनीति में आने की इच्छा जताई थी। मुलायम ने हमेशा से ही परिवारवाद को बढ़ावा दिया है। मुलायम की मर्जी थी कि उनकी दोनों बहूएं राजनीति के दंगल में उतरे. यही मर्जी अपर्णा की भी थी. अपर्णा काफी अरसे से राजनीति में आना चाहती हैं. अपने लिए किसी सेफ सीट की तलाश में जुटी अपर्णा डिम्पल जैसी आसान एंट्री चाहती थीं, पर उन्हें नहीं मिली।

डिंपल-अपर्णा में अक्सर मतभेद रहता है। अपर्णा इस बात से नाराज थी कि उन्हें वो सीट दी गई जिसपर जीत की उम्मीद काफी कम थी और समाजवादी पार्टी ने लखनऊ सीट कभी नहीं जीती. मुलायम की दूसरी पत्नी साधना गुप्ता पर ये आरोप लगते रहें हैं कि वो मुलायम के फैसलों में दखल रखती हैं और मुलायम को अखिलेश के खिलाफ करने में भी उनका ही योगदान है. यही आरोप अपर्णा पर भी लगते रहे हैं। अपर्णा की अपनी जेठानी से बिल्कुल नहीं बनती. दोनों किसी पारिवारिक समारोह में एक साथ कम ही दिखाई देती हैं।

अपर्णा के बाद मुलायम सिंह यादव के एक और रिश्तेदार ने सपा छोड़ दी। मुलायम के साढू और अखिलेश के मौसा पूर्व विधायक प्रमोद गुप्ता ने अखिलेश यादव पर सनसनीखेज आरोप लगाते हुए कहा था कि नेताजी को अखिलेश यादव ने बंधक बनाकर रखा है। उन्होंने यह भी कहा था कि सपा में अब गुंडों का बोलबाला है। प्रमोद गुप्ता ने कहा, हमारे नेता मुलायम सिंह यादव और शिवपाल यादव को अखिलेश ने बहुत प्रताड़ित किया है। समाजवादी विचारधारा को किनारे कर दिया। जो मुलायम को गाली देते हैं उन्हें पार्टी में ले रहे हैं। ऐसे में समाजवादी पार्टी की विचारधारा कहां जाएगी ?

भाजपा में शामिल होने पर अपर्णा ने क्या कहा

बीजेपी में शामिल होने पर अपर्णा ने कहा कि वह परिवार से विमुख नहीं हैं। सभी बड़ों का आशीर्वाद है। भाजपा में शामिल होने को विचारधारा की बात बताते हुए उन्होंने कहा- मैं स्वतंत्र हूं। मुझे पता है मुझे क्या करना है, इसलिए बीजेपी में आई हूं। बीजेपी के भी सभी बड़ों ने मुझे आशीर्वाद दिया है। वह जरूर मेरे लिए कुछ अच्छा करेंगे। अपर्णा से जब यह यह पूछा गया कि यदि आप चुनाव लड़ती हैं तो क्या मुलायम आपके लिए प्रचार करेंगे तो अपर्णा ने कहा कि मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त है। बाकी बातें बाद की हैं। अपर्णा यादव ने पीएम मोदी और सीएम योगी की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि उनके लिए राष्ट्रधर्म सबसे ऊपर है। बीजेपी में शामिल होने के अपने फैसले पर अपर्णा यादव ने कहा कि मैंने राष्ट्र को हमेशा अपना धर्म माना है। हमेशा राष्ट्र के लिए ही फैसला लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मैं बहुत प्रभावित हूं। उनकी नीतियां मुझे नैतिक रूप से अच्छी लगती हूं। इन्हीं कारणों से आज भाजपा ज्वाइन की है। यह पूछे जाने पर कि क्या अखिलेश यादव और सपा राष्ट्रधर्म का निर्वहन नहीं करती ?, अपर्णा यादव ने कहा कि वह परिवार से विमुख होकर कोई बात नहीं कहना चाहतीं। मेरा निजी विचार है कि पिछले पांच वर्षों में सीएम योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में जिस तरह काम किया है। जितनी योजनाएं चलाई हैं, वे प्रभावशाली हैं।

अपर्णा के बीजेपी ज्वाइन करने पर अखिलेश ने क्या कहा

अपर्णा के बीजेपी में शामिल होने पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा था कि उन्हें इस बात की खुशी है कि समाजवादी पार्टी की विचारधारा का विस्तार हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि मुलायम सिंह यादव ने अपर्णा को काफी समझाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा था-सबसे पहले मैं बधाई दूंगा और शुभकमानाएं और साथ ही साथ ही हमें खुशी इस बात की है कि समाजवादी विचारधारा का विस्तार हो रहा है। मुझे उम्मीद है कि हमारी विचारधारा वहां संविधान बचाएगी।

वन रैंक वन पेंशन की वस्तुस्थिति Veterans द्वारा विरोध

कर्नल संजीव शर्मा (रि)
रक्षा व सामरिक विशेषज्ञ

गत वर्ष 15 जून को, भाजपा के वादों से निराश पूर्व सैनिकों ने देशव्यापी विरोध और भूख हड़ताल शुरू कर दी। यहां तक कि कुछ प्रदर्शनकारियों ने, जो भूतपूर्व सैनिक हैं, रेल रोको (ट्रेन रोको) आंदोलन का सहारा लेने की धमकी दी। भारत के सशस्त्र बलों के चार पूर्व प्रमुख जनरल एसएफ रॉड्रिक्स, पूर्व सीओएएस, और एडमिरल एल रामदास, पूर्व नौसेना प्रमुख अरुण प्रकाश और सुरेश मेहता ने तत्कालिन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को एक खुले पत्र में ,13 अगस्त 2015 को चेतावनी दी कि veterans का अपमान और सरकार द्वारा Veterans और सशस्त्र बलों के मुद्दों से गंभीरता से ना निपटने के गंभीर परिणाम हो सकते है।

14 अगस्त 2015, भारत के 68वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर, दिल्ली पुलिस के महानिदेशक, बीएस बस्सी की कमान के तहत, जंतर मंतर, नई दिल्ली में सशस्त्र बलों के Veterans, परिवारों और युद्ध विधवाओं की शांतिपूर्ण सभा पर हमला किया। पुलिस ने ठीक से नेतृत्व नहीं किया, इकट्ठा हुए Veterans को बेदखल करने और डराने के अपने प्रयास में, उनके साथ मारपीट की, चारों ओर धकेला, लाठीचार्ज किया, घसीटा, दुर्व्यवहार एवं अपमानित किया, धमकाया, और Veterans की शर्ट से पदक फाड़े।

सरकार ने 05 सितंबर 2015 को Veterans के बढ़ते विरोध और आक्रोश के कारण नई पेंशन योजना को लागू करने की घोषणा की, जिसे आमतौर पर वन रैंक वन पेंशन या OR¤OP¤ कहा जाता है। पांच महीने बाद फरवरी 2016 में उसने योजना को लागू करने के आदेश जारी किए।

सरकार ने अपने आदेश में कहा ह्नक्रह्वक्क का तात्पर्य है कि समान सेवा अवधि के साथ समान रैंक पर सेवानिवृत्त होने वाले सशस्त्र सेना कर्मियों को समान पेंशन का भुगतान किया जाना चाहिए, चाहे उनकी सेवानिवृत्ति की तिथि कुछ भी हो। इस प्रकार OROP का तात्पर्य वर्तमान पेंशनभोगियों और पिछले पेंशनभोगियों की आवधिक अंतराल पर पेंशन की दर के बीच अंतर को पाटना है।

OROP आदेश की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थीं

1. पूर्व पेंशनभोगियों की पेंशन,नयी पेंशन के आधार पर पुनर्निर्धारित की जाएगी । यह कैलेंडर वर्ष 2013 के पूर्व सेवानिवृत्त होने पर और इसका लाभ 01.07.2014 से प्रभावी होगा।

2. सभी पेंशनभोगियों के लिए समान रैंक और समान अवधि की सेवा के साथ 2013 में सेवानिवृत्त कर्मियों की न्यूनतम और अधिकतम पेंशन के औसत के आधार पर पेंशन का पुनर्निर्धारण किया जाएगा।

3. औसत से ऊपर आहरण करने वालों के लिए पेंशन की रक्षा की जाएगी।

4. बकाया राशि का भुगतान चार समान अर्धवार्षिक किश्तों में किया जाएगा। हालांकि, विशेष/उदारीकृत पारिवारिक पेंशन और वीरता पुरस्कार विजेताओं सहित सभी पारिवारिक पेंशनभोगियों को एक किश्त में बकाया भुगतान किया जाएगा।

5. पेंशन हर 5 साल में फिर से तय की जाएगी।

हालांकि, सरकार द्वारा घोषित योजना Veterans के प्रदर्शनकारी समुदाय को संतुष्ट करने में विफल रही। मेजर जनरल सतबीर सिंह, (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष भारतीय भूतपूर्व सैनिक आंदोलन (आईईएसएम) ने एल नरसिम्हा रेड्डी, पटना उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश और OROP योजना आयोग के प्रमुख और रक्षा मंत्री को लिखा, कि OR¤OP में विसंगतियों को दूर करने की जरूरत है।

इस पत्र में OROP योजना 2015 में पांच प्रमुख विसंगतियों की जांच की मांग की गई जो इस प्रकार है: (1) कलैण्डर वर्ष 2013 के अनुसार पेंशन के निर्धारण के परिणामस्वरूप पूर्व सेवानिवृत्त सैनिकों को आज सेवानिवृत्त होने वाले सैनिक की तुलना में एक वेतन वृद्धि की कम पेंशन मिलेगी। यह दो संसदों द्वारा अनुमोदित OROP की परिभाषा को पूरी तरह से नष्ट कर देगा और इसके परिणामस्वरूप पिछले पेंशनभोगियों के लिए एक वेतन वृद्धि का नुकसान होगा।

(2) 2013 की न्यूनतम और अधिकतम पेंशन के माध्य के रूप में पेंशन तय करने से और अधिक विसंगतियां होंगी, जिसमें समान सेवा अवधि के साथ समान रैंक दो या दो से अधिक अलग-अलग पेंशन प्राप्त करेंगे, इस प्रकार OROP के सिद्धांत का उल्लंघन होगा।

(3) OROP को 2014-15 के बजट में दो संसदों द्वारा अनुमोदित किया गया है। सरकार के मानदंडों के अनुसार, बजट में स्वीकृत सभी प्रस्ताव उस वित्तीय वर्ष की 1 अप्रैल से लागू होते हैं। OROP के मामले में, सरकार ने 1 अप्रैल 14 से इसकी प्रयोज्यता के लिए विशिष्ट आदेश जारी किए थे। इसलिए OROP के कार्यान्वयन की तारीख 1 जुलाई से संसद की मंजूरी के खिलाफ होगी। तिथि बदलने से OROP के लिए 3 महीने की परिलब्धियों का नुकसान होगा। हालांकि, अगर OROP लागू करने की तारीख 1 जुलाई रखी जानी है, तो आधार पेंशन भी जुलाई 2014 के पीपीओ के अनुसार स्वीकार की जानी चाहिए।

(4) हर पांच साल में पेंशन समानता के परिणामस्वरूप एक ही रैंक के एक वरिष्ठ सैनिक को पांच साल के लिए एक जूनियर सैनिक की तुलना में कम पेंशन मिलेगी, इस प्रकार पांच साल के लिए OROP की परिभाषा का उल्लंघन होगा। इससे परिभाषा का स्थायी उल्लंघन भी होगा क्योंकि हर साल नए मामले सामने आएंगे।

(5) तालिकाओं के गठन में कई त्रुटियाँ हैं। यह तालिका कैसे बनाई गई है, यह ज्ञात नहीं है। तथ्य यह है कि किसी भी रैंक के वरिष्ठ रक्षा कर्मियों को अपने कनिष्ठ व्यक्तियों से कभी भी कम पेंशन नहीं लेनी चाहिए। तालिकाओं में ऐसे कई उदाहरण हैं जहां रैंक और सेवा में वरिष्ठ को कम पेंशन प्राप्त करते दिखाया गया है, जबकि उनके कनिष्ठ को ज्यादा पेंशन प्राप्त करते दिखाया गया है। सभी विसंगतियों को दूर करने के बाद तालिकाओं को नए सिरे से तैयार करने की आवश्यकता है।

(6)औनरारी नायब सूबेदारों, मेजर और लेफ्टिनेंट कर्नल की पेंशन पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है।

क) कुछ हवलदारों को उनकी अनुकरणीय सेवा के मद्देनजर औनरारी नायब सूबेदार का दर्जा दिया जाता है। इन सैनिकों को नायब सूबेदार की पेंशन नहीं दी जाती है और इस प्रकार औनरारी रैंक को केवल औपचारिक बना दिया जाता है। औनरारी नायब सूबेदारों को हवलदार की बजाय नायब सूबेदार की पेंशन मिलनी चाहिए। इसी तरह, इसे एक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए और यह एनसीओ और जेसीओ के मामले में सभी औनरारी रैंकों पर लागू होना चाहिए।

(7) इसके अलावा कोई भी अधिकारी अब मेजर रैंक में सेवानिवृत्त नहीं हो रहा है। पूर्व में अधिकारियों को 13 साल की सेवा पूरी करने के बाद मेजर रैंक पर पदोन्नत किया गया था जबकि वर्तमान अधिकारियों को 13 साल में लेफ्टिनेंट कर्नल की पदोन्नति मिल रही है।

वर्तमान स्थिति

1. आईईएसएम द्वारा उठाए गए 2016 के ह्नक्रह्वक्क आदेश में विसंगतियों पर वर्तमान एनडीए सरकार द्वारा विचार नहीं किया गया है।
2. इसलिए ड्डश्वस्रू को कानूनी रूप से इस मुद्दे को उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा और उसने भारत के सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की और मामला वर्तमान में विचाराधीन है।

हमारा बूथ मजबूत होगा, तो स्थानीय समिति और संगठन को मजबूती मिलेगीः सुहास भगत

विस्तारक बनकर बूथों पर पहुंचे प्रदेश अध्यक्ष, संगठन महामंत्री और प्रदेश सरकार के मंत्री

भोपाल। बूथ विस्तारक योजना हर बूथ को मजबूती देने के लिए चलाई जा रही है। अगर हमारा बूथ मजबूत होगा तो स्थानीय समिति और संगठन भी मजबूत होंगे तथा हम पार्टी और सत्ता के काम को मजबूती के साथ आगे बढ़ा सकेंगे। यह बात भारतीय जनता पार्टी के संगठन महामंत्री सुहास भगत ने मंगलवार 25 जनवरी को सेवढ़ा विधानसभा के इंदरगढ़ ग्रामीण मंडल के बूथ क्रमांक 138 पर बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कही।

स्वर्गीय कुशाभाऊ ठाकरे जी के जन्म शताब्दी वर्ष को संगठन पर्व के रूप में मनाते हुए भारतीय जनता पार्टी 20 जनवरी से 10 दिवसीय बूथ विस्तारक योजना चला रही है। इस अभियान के अंतर्गत प्रदेश अध्यक्ष, मंत्री, सांसद, प्रदेश पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधिगण विस्तारक के रूप में बूथ केंद्रों पर पहुंच रहे है। मंगलवार को विस्तारक के रूप में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा पिपरिया विधानसभा के खापरखेडा के बूथ क्रमांक 48 पर एवं प्रदेश संगठन महामंत्री सुहास भगत दतिया जिले के सेवढ़ा विधानसभा के इंदरगढ़ ग्रामीण मंडल में बूथ क्रमांक 138 पर पहुंचे। प्रदेश सरकार के मंत्रीगण भी विभिन्न बूथों पर विस्तारक बनकर पहुंचे।

ठाकरे जी की तरह संगठन को मजबूत बनाने जुट जाएं कार्यकर्ताः प्रदेश संगठन महामंत्री सुहास भगत दतिया के सेवढ़ा के बूथ क्रमांक 138 पर पहुंचे और विस्तारक के रूप में बैठक ली। उन्होंने कहा कि बूथ विस्तारक योजना संगठन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे संगठन की मजबूती के लिए किए जा रहे प्रयासों को गति मिलेगी। भगत ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता आधारित दल है। जिस प्रकार ठाकरे जी ने गांव गांव की चौपालों पर, बूथों पर संगठन के विस्तार और मजबूती के लिए कार्य किया था उसी तरह हमारा कार्यकर्ता एकजुट होकर अपने बूथ को मजबूत करने में जुट जाए। यही उनके लिए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित होगी। प्रदेश संगठन महामंत्री भगत ने पार्टी कार्यकर्ता गोवर्धन केवट के निवास पहुंचकर भोजन किया। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष सुरेंद्र बिधौलिया, राकेश गुप्ता, विस्तारक मंडल प्रभारी मोहन पटवा, महेंद्र यादव, रामलखन गुर्जर, पुष्पेंद्र राजा बुंदेला, सुनील सेन उपस्थित थे।

बूथों पर पहुंचे प्रदेश सरकार के मंत्री-

बूथ विस्तारक योजना के अंतर्गत प्रदेश शासन के मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा छिंदवाड़ा, मीना सिंह मानपुर के पिपरिया बरबसपुर, गोविन्द सिंह राजपूत सुरखी के राहतगढ़, बृजेन्द्रप्रताप सिंह पन्ना के पन्ना कुंजवन, प्रेमसिंह पटेल बड़वानी के डोंगरगांव, हरदीप सिंह डंग सुवासरा, राजवर्धन सिंह दत्तीगांव बदनावर के बूथ क्रमांक 10 रूपाखेड़ा, रामखेलावन पटेल अमरपाटन के मर्यादपुर, सुरेश धाकड़ पोहरी के भटनावर एवं सांसद सुमेर सिंह सोलंकी बड़वानी के सेमल्याखोदरा के बूथ क्रमांक 315 पर बूथ विस्तारक अभियान में शामिल हुए।

समाज के हर वर्ग को पार्टी संगठन से जोड़ें कार्यकर्ता : शिवराजसिंह चौहान

भोपाल। बूथ विस्तारक योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान सोमवार को मुरैना जिले के जौरा विधानसभा के पहाडगढ मंडल के सगोरिया ग्राम के बूथ क्रमांक 243 पर पहुँचे। उन्होंने विस्तारक के रूप में बूथ समिति की बैठक ली। उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि समाज के हर वर्ग को पार्टी से जोड़ें।

मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान विस्तारक के रूप में बूथ क्रमांक 243 पर पहुंचे। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर एवं पार्टी नेता, कार्यकर्ता उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि बूथ विस्तारक योजना नए लोगों को पार्टी से जोड़ने और संगठन को मजबूती देने का माध्यम है। इसलिए बूथ समितियों में समाज के सभी वर्गों के लोगों को जोड़ें। इसमें सभी जातियों, वर्गों का समावेश होना चाहिए। बूथ के कार्यकर्ता समाज के हर वर्ग को पार्टी संगठन और उसकी विचारधारा से जोड़ने का काम करें।

चौहान ने कहा कि पार्टी ने श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जी के जन्मशताब्दी वर्ष को संगठन पर्व के रूप में मनाने का निर्णय किया। ठाकरे जी हम सभी के श्रद्धेय हैं। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ सहित पूरे देश में उन्होंने काम किया। हम सभी कार्यकर्ता ठाकरे जी की देन है। उनके जन्मशताब्दी वर्ष में पार्टी के काम का और विस्तार करें।

उन्होंने कहा कि बूथ समितियां लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने का काम करें। बैठक में केंद्रीय मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर ने भी कार्यकर्ताओं से संवाद किया। इसके उपरांत मुख्यमंत्री चौहान एवं केंद्रीय मंत्री तोमर ने बूथ अध्यक्ष संतोषीलाल धाकड़ के निवास पर पार्टीजनों के साथ भोजन किया तथा हितग्राही सम्मेलन और सभा के लिए रवाना हो गए।

इस अवसर पर प्रभारी मंत्री भारतसिंह कुशवाह, जौरा विधायक सूबेदार रजौधा, जिलाध्यक्ष योगेशपाल गुप्ता, जिला प्रभारी अभय चौधरी, मंडल अध्यक्ष हेमंत धाकड़ सहित कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तीसरी लहर को जन-सहयोग के मॉडल से रोकेंगे: मुख्यमंत्री चौहान

मध्यप्रदेश में शासन के साथ इस युद्ध में साथ खड़ा है आमजन

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कोविड के नियंत्रण में मध्यप्रदेश का जन-भागीदारी मॉडल तीसरी लहर में भी काम आएगा। कोविड की पहली और दूसरी लहर में जिस तरह से जन-सहयोग से संकट की स्थितियों से निपटते हुए कार्य हुआ है उसी तरह एक बार फिर सरकार और नागरिक मिलकर तीसरी लहर को पराजित करेंगे। संयुक्त रूप से किए जाने वाले प्रयत्नों को सफलता मिलेगी, मानवता जीतेगी।

मुख्यमंत्री वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रदेश के जिलों में कोविड की स्थिति, किए जा रहे प्रयासों की जानकारी ले रहे थे। मुख्यमंत्री ने क्राइसिस मैनेजमेंट ग्रुप के सदस्यों से संवाद कर उनके सुझाव प्राप्त किए। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और राज्य के मंत्री भी वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा चर्चा और बैठक में शामिल हुए।

सिर्फ 3 प्रतिशत के आसपास भर्ती हैं पॉजिटिव रोगी, सावधानी बरतना जरूरी: मुख्यमंत्री ने कहा है कि तीसरी लहर के रूप में एक बड़ी चुनौती हमारे सामने है। घबराना नहीं है, सजग और सतर्क रहना है। कोरोना के केस तेजी से बढ़ने की आशंका भी है। पूरी दुनिया की तरफ से एक तथ्य आया है कि इस लहर में जो संक्रमित होते हैं, उसकी गंभीरता कम है। इसलिए अस्पताल में भर्ती होने वाले प्रकरण अभी लगभग तीन प्रतिशत से थोड़े ज्यादा है। पिछली लहर में 40 प्रतिशत तक रोगी भर्ती करने पड़ते थे। अब तक हुए शोध के बाद विशेषज्ञों का मत है कि इस वैरिएंट का असर गले तक रहता है। यह लंग्स को अधिक प्रभावित नहीं करता है। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम सजग न रहें। पूरी सजगता से इस लहर का मुकाबला करते हुए कोविड महामारी से हमें जीतना है] यह हमारा संकल्प भी है। प्रदेश में अभी 21 हजार 394 मरीज होम आयसोलेशन में हैं। इन्हें आवश्यक सुविधाएँ दी जा रही हैं।

प्रदेश में हो रहे रोजाना 80 हजार टेस्ट: मुख्यमंत्री ने कहा कि आज इस चर्चा में ब्लॉक के साथ वार्ड और पंचायतों की क्राइसिस मैनेजमेंट कमेटियाँ भी जुड़ी हैं। मैं अपील करता हूँ कि कोरोना टेस्ट केलिए जिलों को जो लक्ष्य दिए हैं वे पूरे होने चाहिए। जन-प्रतिनिधि अपने क्षेत्र में टेस्टिंग पर ध्यान दें।

लोक निर्माण विभाग की 70 सड़कों का काम अप्रैल तक पूर्ण करने के निर्देश

केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने की विकास कार्यों की समीक्षा

सभी एजेंसियां पूरी गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में निर्माण-विकास कार्यो को पूरा करें: तोमर

मुरैना। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री तथा क्षेत्रीय सांसद नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा है कि लोक निर्माण विभाग के पास अब पर्याप्त पैसा है और वर्तमान में निर्माणाधीन 90 सड़कों में से जिनके काम 80 से 90 प्रतिशत तक पूर्ण हो गये है, उन्हें मार्च-अप्रैल 2022 तक पूर्ण किया जाएं। उन्होंने पी.आई.यू. के संभागीय परियोजना अधिकारी को निर्देश दिये कि नूरावाद में 500 लाख रूपये लागत से बन रहा बागवानी उत्कृष्ठता केन्द्र जून 2022 तक पूर्ण हो जायें।

यह केन्द्र किसानों के प्रशिक्षण और हॉस्टल, उनके रहने के लिये तैयार किया जा रहा है, इसमें विलंब नहीं होना चाहिये। केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि सभी निर्माण विभाग, निर्माण एजेन्सी सभी विकास कार्य पूरी गुणवत्ता के साथ समय-सीमा के अंदर पूर्ण करें। निर्माण विकास कार्यो में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

केन्द्रीय मंत्री तोमर कलेक्टर मीटिंग हॉल में सभी निर्माण विभागों/एजेन्सियों के निर्माण-विकास कार्यो की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में कलेक्टर बी.कार्तिकेयन, जिला पंचायत के सीईओ रोशन कुमार सिंह, अपर कलेक्टर, आयुक्त नगर निगम, एमपी.आर.डी.सी. एन.एच.ए.आई. के अधिकारी, लोक निर्माण, पीएचई, हाउसिंग बोर्ड, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण, मध्यप्रदेश विद्युत वितरण कंपनी, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा सहित अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

केन्द्रीय मंत्री तोमर ने लोक निर्माण विभाग और अटल प्रोग्रेस-वे के कार्यो की समीक्षा करते हुये कहा कि लोक निर्माण विभाग की सड़कों के निर्माण में जहां भूमि विवाद है, वह जिला प्रशासन के अधिकारी स्वयं जाकर भूमि विवादों का निराकरण सुनिश्चित करायें। जहां फोरेस्ट से स्वीकृतियां अप्राप्त है, वहां वनमण्डलाधिकारी रूचि लेकर स्वीकृतियां जारी करें, ताकि निर्माण विकास कार्यो में विलंब न हो। उन्होंने कहा कि रूलर क्षेत्र में कृषि, सिंचाई सहित अन्य विकास कार्यो के लिये नावार्ड का सहयोग भी लें। केन्द्रीय मंत्री ने शनिचरा मंदिर से बटेश्वर, पढ़ावली, रिठौराकलां मार्ग, खेरा, अजनौधा, कुतवार से बिचौला-रिठौरामार्ग, बानमौर से शनि मंदिर मार्ग, टेकरी नूरावाद से सुमावली, इमलिया मार्ग, नूरावाद टेकरी से बिचौला रिठौरा मार्ग को मार्च 2022 तक पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री को निर्देश दिये कि स्वीकृत 6 निर्माण कार्यो में प्राप्त निविदाओं पर काम भी अक्टूबर 2022 तक पूर्ण करायें। उन्होंने डोंडरी मेन रोड़ से सिकहरा तक, किशनपुर से लुखरियाई, व्हाया रावत की, परदूपुरा तक, गोपी रोड़ से मनफूल का पुरा मार्ग, शनिधाम से बहरोली मार्ग, गब्बर सिंह का पुरा से अरूआ का पुरा मार्ग के भूमि विवाद को तत्काल निराकरण कराके सड़कों का काम पूरा कराने के निर्देश दिये।

तोमर ने पीआईयू के चल रहे 18 कार्यो की समीक्षा करते हुये निर्देश दिये कि जो कार्य 80 से 90 प्रतिशत तक पूर्ण हो गये है, उन्हें जनवरी-फरवरी के अन्त तक पूर्ण कर हेण्डओव्हर किये जाये। अम्बाह, पिनाहट मार्ग से चंबल नदी पर (उसेदघाट) पुल निर्माण की समीक्षा के दौरान केन्द्रीय मंत्री ने परियोजना अधिकारी को निर्देश दिये कि जून 2025 से पूर्व पुल का काम हो जाये। उन्होंने ककड़दा तीरथपुर मार्ग के प्रस्ताव कलेक्टर को देने, जनसम्पर्क भवन का शीघ्र भूमिपूजन कराने के निर्देश संभागीय परियोजना अधिकारी को दिये। अटल प्रगति पथ का प्रजेन्टेशन देते हुये कलेक्टर ने अवगत कराया कि एन.एच.ए.आई को 1658.2 हेक्टेयर जमीन दी जा चुकी है, इसमें 1026.50 हेक्टेयर भूमि शासकीय, 448.41 हेक्टेयर भूमि निजी और 183.31 हेक्टेयर भूमि वन भूमि है, दी जा चुकी है। कलेक्टर ने बताया कि 448 कृषकों से प्रस्ताव 30.99 हेक्टेयर के बनाये गये है, इनमें से 242 कृषक प्रायवेट भूमि देने को तैयार है। कलेक्टर ने यह भी बताया कि सबलगढ़ में 6 गांव, जौरा का एक, मुरैना के तीन, पोरसा का एक गांव से निजी भूमि देने में स्थानीय विवाद है। कलेक्टर ने कहा कि इन गांवों में एक राउण्ड और चलाकर लोंगो को प्रेरित किया जायेगा।

केन्द्रीय मंत्री ने हाउसिंग बोर्ड के कार्यो की समीक्षा करते हुये निर्देश दिये कि विश्व बैंक परियोजना के अन्तर्गत 160 महाविद्यालयों के निर्माण कार्यो में से मुरैना जिले में चल रहे पीजी कॉलेज के रिनोवेशन नवीन निर्माण कार्यो, स्वास्थ्य विभाग के 300 बिस्तरीय हॉस्पीटल के कार्यो को शीघ्र पूर्ण किया जाये। इसी तरह राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 300 सीटेड हॉर्टीकल्चर ट्रेनिंग सेन्टर पोरसा, स्वास्थ्य विभाग के 18 स्टाफ क्वाटर का कार्य पूर्ण किया जाये।

नगर निगम द्वारा उठाये गये मुद्दो पर फ्लाईओव्हर ब्रिज की लेण्डस्केपिंग विकसित कर सौंन्दर्यीकरण करने, वहां की जगह व्यवस्थित करने, अच्छे शौचालय बनाने, जगह-जगह बेरीकेट्स, प्लान्टेशन करने तथा सर्विस रोड़ को ठीक करने के निर्देश एन.एच.ए.आई के अधिकारी को दिये। बैठक में नगर निगम की भूमि पर 1.63 हेक्टेयर क्षेत्र में टोलनाका भूमि का लंबित मुआवजा राशि को आपसी समझौतो के आधार पर निपटाने के केन्द्रीय मंत्री ने निर्देश दिये।

राजनीतिक व्यवस्था की चौखट पर असहाय आस्था और योग्यता

सतीश जोशी

हमारी संस्कृति, सनातन परंपरा और रिवाज सत्तर साल पहले धर्मनिरपेक्षता के भेंट चढ गये हैं। इसके लिए कौन दोषी है ? हमारी सनातन परंपरा का खलनायक कौन है? क्या वे जो इसके नाम पर राजनीति करते हैं। कौन करते हैं राजनीति ? जो सनातन परंपरा, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का झंडा बुलंद करते हैं वो या वे जिनको इस झंडाबरदारी से तकलीफ है। आस्थाओं के सवाल खडे करने वाले खलनायक हैं या आस्था को दरकिनार कर मुल्क चलाने की पैरवी करते हैं वे खलनायक हैं। धर्मनिरपेक्ष या धर्मसापेक्ष की बात करने वाले खलनायक हैं? रोटी, रोजगार, व्यवसाय के सवालों के नाम पर आस्थाओं का अपमान करने वाले भारत के असली नायक हैं या इन सवालों की कीमत पर आस्था की उपेक्षा करने वाले नायक हैं। लोकतंत्र में इन सवालों के जरिये आम आदमी के अधिकारों की रक्षा की जा सकती है या लोकतंत्र के लिए इन सवालों को सबसे बडा रोडा समझा जाए? अम्बेडकर के लिखे और विद्वानो के मंथन से जो संविधान हमारे सत्ता संचालन की भूमिका अदा कर रहा है, उसने अपने कागजो में कहीं, परंपरा, सनातन भारत और सांस्कृतिक आस्थाओं को लेकर क्या कहा है, विधि विशेषज्ञ इस पर प्रकाश डाल सकते हैं या नहीं। क्या अम्बेडकर ने किसी पंक्ति में यह लिखा या लिखवाया कि सवर्णो के बाप-दादाओ के कथित अत्याचार की सजा आज के सवर्णो को आजादी के कितने साल बाद तक भुगतनी होगी। भारत की बौद्धिक क्षमता का प्रतिशत कब समान रूप से चालीस से नब्बे प्रतिशत एक समान होगा। वोट के सौदागरों को तो बोलने में नानी-दादी याद आएगी, वकीलों की कौम संविधान पढकर विश्लेषण करे कि आज के सवर्णो को और कितने साल सजा भुगतनी है। सवर्णो के बाप-दादाओ ने कुए पर पहरे लगा दिए थे, बावड़ी अलग कर दी थी, बस्ती अलग थी, मंदिरों में प्रवेश नहीं था, अब तो वह भेदभाव नाम मात्र का ही है। इसलिए योग्यता का पैमाना कब बदलेगा, यह पूछा जा सकता है या पूछने वाले खलनायक करार दिए जाएंगे। आस्था और योग्यता ये दो ऐसे सवाल हैं जिन पर बोलने वाले किसी की नजर में नायक, किसी की नजर में खलनायक हैं। आस्था पर बोलने वाले का एक वर्ग, समाज के हर वर्ग में मिल जाएगा, पर उसकी भी राजनीतिक भूख आस्था के साथ पूरा न्याय नहीं कर रही। योग्यता आखिर न्याय की किस दहलीज पर पैरवी करे? है कोई जवाब आज की व्यवस्था के पास!

निर्विवाद देशभक्ति और राजनीतिक षड्यंत्र

डॉ वीणा घाणेकर

23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125 वीं जयंती मनाई गई। आजाद भारत की सरकारों ने उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित करने की कभी भी गंभीर कोशिश नहीं की। जबकि उनकी योग्यता तो स्वीडन के नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने से भी कहीं अधिक बढ़कर थी।

कितना आश्चर्य है कि जन गण मन अधिनायक जय हे! जैसे गीत को रचने वाले, ब्रिटिश राज के राजकुमार जॉर्ज पंचम के भारत आगमन की शान में उनका गुणगान करने वाले, रविंद्र नाथ टैगोर को तो नोबेल पुरस्कार तथा भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न मिल गया किंतु विशुद्ध रूप से देशभक्ति से ओतप्रोत नेताजी सुभाष चंद्र बोस को नहीं। जिन्होंने जर्मनी में, जापान में, रूस में ,सिंगापुर में, आजाद हिंद फौजी को गठित कर ,मातृभूमि भारत माता को आजाद करने का जो अद्वितीय साहस से बीड़ा उठाया।

उसे ना तो आजाद भारत की सरकार ने पसंद किया और ना ही विदेशी सरकारों ने। पूरे विश्व के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां अपने देश को आजाद कराने के लिए विदेशों में सेना को गठित करके किसी आजादी के दीवाने ने संघर्ष किया हो!

आजाद भारत की सरकारों ने, राजनीतिक षडयंत्र पूर्वक उनके जिंदा रहने या मरने की अफवाह उड़ा कर, उनकी अद्वितीय देश भक्ति के अस्तित्व को ही नकार दिया! फिर कालांतर में आजादी के 53 साल के पश्चात उन्हें जो भारत रत्न का सम्मान देने की कोशिश की गई, तो उनके परिवारजनों ने ही उसे लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि यह नेताजी सुभाष चंद्र बोस के उच्चतम सर्वश्रेष्ठ और अनन्य देशभक्ति का अपमान होता! ऐसे अप्रतिम देशभक्त को श्रद्धांजलि देने के लिए हमारे पास शब्द और भाव भी हैं क्या ?

जीवन का मूल्य और भुगतान

पंकज चतुर्वेदी

जब से मानवीय जीवन इस धरा पर है तब से यह द्वन्द निरंतर है कि मानवीय जीवन का मूल्य क्या है। इस बात को लेकर अभी तक यह मत स्पष्ट नहीं हुआ है कि जीवन का मूल्य क्या है। वास्तव में देखा जाए तो बहुत से लोग अभी तक जीवन मूल्यों को समझें नहीं है। बिगड़ी जीवनशैली के कारण बिगड़ता स्वास्थ्य इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। सबसे पहले इस बात को समझना होगा कि यह जीवन है अनमोल है, इसका कोई मूल्य नहीं है। भगवान बुद्ध से जुड़ी एक कहानी है। एक व्यक्ति ने भगवान से पूछा कि जीवन का मूल्य क्या है। तो भगवान ने एक पत्थर देते हुए कहा कि इस पत्थर को बेचना नहीं सिर्फ़ भिन्न-भिन्न लोगों को दिखाकर इसका मूल्य पूछना। व्यक्ति एक फल वाले के पास गया तो फल वाले ने कहा कि पचास किलों फल ले जाओ और यह पत्थर मुझे दे दो।

जब वह एक किराने वाले के पास गया तो उसने कहा कि एक बोरा गेहूं ले जाओ और मुझे यह पत्थर दे दो। जब वह उसी पत्थर को लेकर एक सुनार के पास पहुँचा तो उसने कहा कि 50 लाख रुपये ले लो व यह पत्थर मुझे दे दो। वह व्यक्ति अचरज में पड़ गया। इसके बाद वो उस पत्थर को लेकर एक ज़ौहरी के पास गया हीरों के उस व्यापारी ने सीधे दो करोड़ रुपए मूल्यांकन किया। उस व्यक्ति के इनकार करने पर जौहरी ने कहा कि यह बहुमूल्य श्रेणी का पत्थर है ।तुमको में इस के मुँह माँगे दाम दे सकता हूँ।

आश्चर्यचकित वह व्यक्ति भगवान बुद्ध के पास लौटा, कहा कि प्रभु सब लोग इसका अलग -अलग मूल्य रहें हैं ऐसा क्यों। इस पर भगवान ने कहा कि ये ठीक हमारे जीवन के मूल्य के समान है । सब लोग तुम्हारा व तुम्हारे जीवन का मूल्य उनके ज्ञान, बुद्धि और क्षमता के आधार पर लगाएंगे। ना कि तुम्हारी योग्यता के आधार पर । यही वास्तविक जीवन है।

आशय स्पष्ट है कि जीवन अनमोल है। फिर भी हम से बहुत से लोग अपने जीवन का मूल्य नहीं समझ पाते। अधिकांश लोग हमारा मूल्यांकन उनकी बुद्धि ,योग्यता और क्षमता के आधार पर करते हैं और हम उसी को अपने जीवन का मूल्य समझने की भूल कर लेते हैं। हमको सबसे पहले स्वयं का मूल्यांकन करना पड़ेगा ।हम जितना सर्वश्रेष्ठ मूल्यांकन स्वयं का करेंगे हमारा उतना ही अधिक मूल्यांकन दुनिया में अन्य लोगों के द्वारा किया जाएगा।

हम इसी बिंदु पर भूल कर जाते हैं। किसी भी अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए हमारे मूल्यांकन को जो असल में उस व्यक्ति की समझ पर निर्भर होता है ,हम उसकी राय पर स्वयं का अवमूल्यन कर लेते हैं।

इसके साथ साथ हम को यह भी समझना होगा कि हमारे जीवन में कुछ भी मुफ़्त नहीं है। प्रत्येक वस्तु के लिए हमको भुगतान करना है। कई बार ऐसा हो सकता है कि उपयोग हमने किया हूँ और भुगतान हमारी आने वाली पीढ़ी करे। जैसा पर्यावरण प्रदूषण के विषय में है। दुरूपयोग हमने किया लेकिन बाधाएँ हम आगामी पीढ़ी के लिए उत्पन्न कर जा रहे है पर्यावरण की हानि का भुगतान हमारी आगामी पीढ़ी करेगी।

हम इस भ्रम में हैं कि ये हवा ,पानी एवं सूरज की रोशनी ये सब तो हमारे लिए फ़्री हैं। किंतु अब पानी का मूल्य हम चुका रहे हैं। पैसे देकर पानी ख़रीद रहे है। शुद्ध हवा का व्यापार भी शुरू हो गया है। हो सकता है आने वाले समय में शुद्ध सूर्य के प्रकाश के लिए भी भुगतान करना पड़े।

इन उदाहरणों से ही स्पष्ट है कि जीवन अनमोल है। किंतु जीवन के मूल्यों को स्थापित करने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की मुद्राओं में भुगतान करने पड़ेंगे ।हर जगह आवश्यक नहीं है कि धन के रूप में भुगतान करना पड़े ।बहुत से स्थानों पर वस्तु के रूप में ,कहीं श्रम के रूप में ,कहीं साधना के रूप में ,कही सेवा के रूप में तो कहीं भक्ति के रूप में हमें भुगतान करना होता है पर भुगतान अवश्य करना होता है। लेकिन धन या वस्तु के अतिरिक्त किए गए भुगतान को हम लोग सामान्य तौर पर भुगतान नहीं मानते ।परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है धन और वस्तुओं के अलावा भी जीवन में बहुत सारे भुगतान है।

हमारा सबसे पहला भुगतान आत्म मूल्यांकन का भुगतान है ।अपने आपको इस दुनिया में यदि आपने सर्वश्रेष्ठ व बहुमूल्य नहीं माना तो इस दुनिया आप को कोई भी सर्वश्रेष्ठ और बहुमूल्य नहीं स्वीकारेगा ।जैसा आपका आत्म आंकलन वैसा आपका बाह्य मूल्यांकन ।किसी के द्वारा भी यदि आप का अवमूल्यन किया जाता है तो वह उस की सोच ,बुद्धि और क्षमता का स्तर है ,आपका नहीं ।

कुछ अन्य भुगतान जो आपको अपनी मूल्यों की वृद्धि के लिए करना हैं वह बहुत सरल भुगतान है । सबसे पहले सकारात्मक सोच ।जब आपकी सोच सकारात्मक होगी तो आप आत्म मूल्यांकन सही ढंग से कर पाएंगे एवं स्वयं की क़ीमत को दुनिया में स्थापित कर पाएंगे। कभी भी ऐसा संभव नहीं होगा कि आप आत्म मूल्यांकन कमज़ोर हो और दुनिया में आपका गुणगान हो।

किन्तु इसमें हमको इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि अभिमान नहीं करना है ।हमें आत्म सम्मान व मान रखना है।अभिमान व आत्मसम्मान में बुनियादी अंतर अहंकार की भाव और भावना का है ।जहाँ अहंकार है वह अभिमान है ।जहाँ विनम्रता है वह मान। यह विनम्रता भी भुगतान की एक मुद्रा है ।मुद्रा से आशय करेंसी से है।

कुछ अन्य भुगतान जो आपके मूल्यों को और सशक्त करेंगे। उन पर भी ध्यान देना अति आवश्यक है। जैसे मानव सेवा ,संवेदना ,करुणा, दया एवं ममता ।यह सब अलग -अलग प्रकार की करेंसी हैं।यह सभी धर्मों में भी उल्लेखित हैं।यह बात अलग है कि हम इसे मानते नहीं हैं।

यदि ये सब आपके भंडार में है तो आप ईश्वर की दृष्टि व सृष्टि में सबसे मूल्यवान हैं। सबसे सुखद यह है कि आप जब चाहें तब जीवन में किसी भी क्षण उक्त उल्लेखित मुद्रा 6करेंसी8का उपयोग कर अपने मूल्यांकन में वृद्धि कर सकते हैं। यह साधारण सा व्यापारिक सिद्धांत है कि जिसका जितना ज़्यादा मूल्य उसका उतना ज़्यादा महत्व।

अब आपको यह निर्धारित करना है कि आप आपके जीवन को मूल्यवान और महत्वपूर्ण बनाना चाहते हैं या नहीं ।यदि आज आपको आपका जीवन मूल्यवान और महत्वपूर्ण नहीं लगता है तो इस क्षण से आप स्वयं के जीवन को मूल्यवान और महत्वपूर्ण बना सकते हैं ।क्योंकि ईश्वर ने यदि आपको जीवन दिया है तो उसमें तो आपको बहुमूल्य बनाकर इस धरा पर भेजा है ।अब आप पर निर्भर करता है कि आप कैसे स्वयं के मूल्य को अक्षुण्ण रखते हैं।

बाजार की रौनक को ऑफलाइन करती ऑनलाइन शापिंग

भोपाल/रीतेश दुबे

देश भक्ति पवित्र सलिला भागीरथी के समान है जिसमें स्नान करने से शरीर ही नहीं अपितु मनुष्य का मन और अन्तरात्मा भी पवित्र हो जाती है। स्वेदश की रक्षा और उसकी उन्नति के लिए अपना तन,मन,धन देश के चरणों में समर्पित कर देना ही देश भक्ति है, देश प्रेम है। देश की आर्थिक उन्नति तभी होगी जब हम देश बने उत्पाद ,देश के लोगों के माध्यम से ही खरीदेगें। यहीं कारण है कि महात्मा गांधी ने स्वदेशी उत्पादन पर और स्वदेशी वस्तु के उपयोग पर जोर दिया ,महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी के आंदोलन के समय कई पर विदेशी सामग्रीयों की होली भी जलाई गई। महात्मा गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन को हम सिर्फ आजादी के आंदोलन तक समिति रख पाए आजादी के बाद विदेशी उत्पादों ने घर घर में पहुँच बना ली।

आज का समय ब्रांडेड समान का है किसी भी वस्तु की गुणवत्ता तभी अच्छी समझी जाती है ,यदि वह विदेश में निर्मित है। कोई भी समान मुख्य डीलर ,डीलर,थोक व्यापारी से होता हुआ फुटकर व्यापारी की दुकान के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुंचता है, लेकिन अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों इन सभी के व्यवसायों पर अतिक्रमण कर लिया है।

इस समय देश के सबसे ज्वलंत मुद्दों में से एक है ऑनलाइन करोबार । प्रत्येक अविष्कार या सिद्धांत के दो पहलू होते है- लाभ या हानि । ज्यादातर लोग इनसे होने वाले लाभ पर ही ध्यान देते हैं। आज उपभोगतावादी युग में ज्यादातर लोग इसी प्रयास में रहते हैं कि इस सुख को अधिक से अधिक कैसे प्राप्त किया जाए।

त्योहारों के मौसम में व्यापारी सालभर का लाभ कमाना चाहते है,लेकिन ऑनलाइन की बाजार व्यवस्था व्यापारी तबके के धंधे मंदे कर रही है। ऑनलाइन चलने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनीयां उत्पाद निर्माता को कम लाभ देकर ,अधिक कीमत पर उत्पाद बेचती है,और उपभोक्ताओं को भी चूना लगा रही है। कई ऑनलाइन शापिंग पोर्टल पर नकली उत्पाद भी धड़ल्ले से बेचे जा रहे है।इन नकली उत्पादों में ऐसी फिनिशिंग होती है ,कि आम उपभोक्ता नकली और असली का अंतर ही नहीं समझ पाता है।

परंपरागत दुकानदारों से उपभोक्ताओं के पीढ़ी दर पीढ़ी संबंध होते थे, जिससे बजट न होने पर भी उपभोक्ता उधारी में सामान ला सकता था, लेकिन ऑन टाइम या कैश ऑन डिलेवरी की बाध्यता होने के कारण ऑनलाइन शापिंग में यह संभव नहीं है। बीते दिपावली का त्यौहार हो या अन्य कोई अवसर हो बाजार की रौनक पहले की तरह नहीं रह गयी है। ऑनलाइन शापिंग के कारण रिटेल कारोबार कई गुना कम हो गया है। वस्त्र,कॉस्मेटिक,आभूषण या अन्य जनरल समान हर आइटम ऑनलाइन मिलने के कारण दुकानदार हाथ पर हाथ धर कर बैठे है ,और ग्राहक की बांटजौहते है। ऑनलाइन शापिंग आज महानगरों से होते हुई छोटे शहरों और कस्बाई इलाकों तक पहुंच गई है। ऑन लाइन शापिंग आज झूठी शान दिखाने का एक माध्यम बन गई ,इसके माध्यम कई लोग अपनी रहीसी भी प्रदर्शित करते है।

इस बारे में प्रधानमंत्री ने भी लोकल चीजें के लिए प्रोत्सोहान क मन्तव्य रखते हैं। प्रधानमंत्री ने कई बार कहा कि हम कोशिश करें लोकल चीजों को खरीदें। हमारी जरूरत की चीज हमारे गांव से मिलती है तो तहसील में जाने की जरूरत नहीं है। तहसील में मिलती है तो जिले तक जाने की जरूरत नहीं है। प्रधानमंत्री नागरिकों से आग्रह भी करते है कि हमारे बुनकरों के हाथ से बना हुआ ,हमारे खादी वालो के हाथ से बना हुआ कुछ न कुछ तो हमें खरीदना ही चाहिए।

प्रधानमंत्री का यह संदेश वाकई सराहनीय है, इसमें क्षेत्रीय लोगों के रोज़गार के संरक्षण का निवेदन तो है ही ,साथ में स्वेदषी की बात भी है। कही न कही ऑनलाइन शापिंग की लत भारतीय अर्थव्यवस्था को ऑफलाइन करने की राह पर है। इस बात की आवश्यकता है कि हम हमारे क्षेत्रीय व्यवसायी को भी उचित अवसर देने का प्रयास करें।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की बड़ी घोषणा

शहीदों के सम्मान में रायपुर में प्रज्जवलित होगी छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति

रायपुर ब्यूरो

देश में कहीं भी पुलिस/सेना/सशस्त्र बलों में कर्तव्य पथ पर शहीद होने वाले छत्तीसगढ़ के वीरों और छत्तीसगढ़ में शहादत देने वाले देश भर के रणबांकुरों के सम्मान में जलती रहेगी छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने शहीदों के सम्मान में राजधानी रायपुर में छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति का निर्माण कराने की घोषणा की है। छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति का निर्माण चैथी वाहिनी छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल माना रायपुर के परिसर में किया जायेगा। शहीदों के सम्मान में छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति अनवरत जलती रहेगी। छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति का भूमि पूजन सांसद राहुल गांधी के हाथों आगामी 03 फरवरी को किया जायेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा है कि कांग्रेस बलिदानियों की पार्टी रही है और बलिदान का सम्मान करना जानती है। इतिहास गवाह रहा है कि जो भी समाज अपने शहीदों का सम्मान नहीं बनाये रखता, उनकी कुर्बानियों की यादों को संजोकर नहीं रखता, उनकी निशानियों का अपमान करता है, वो समाज मिट जाता है।

सन 1972 में हमारी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश के शहीद वीर सैनिकों के सम्मान में नई दिल्ली में अमर जवान ज्योति प्रज्वलित की थी जो 1972 से लगातार जलती आ रही थी लेकिन केंद्र सरकार ने अमर जवान ज्योति को इंडिया गेट से हटाकर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में शिफ्ट कर दिया। इंडिया गेट पर जलती हुई अमर जवान ज्योति आने जाने वालों को दिखती रहती थी उनमें देश के शहीदों के प्रति गर्व और कृतज्ञता का भाव पैदा करती थी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में इंडिया गेट स्थित अमर ज्योति बुझाए जाने से वे आहत हुए हैं लेकिन अब राजधानी रायपुर में भी शहीदों के सम्मान में छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति प्रज्वलित होगी। छत्तीसगढ़ के जिन सपूतों ने वर्दीधारी सेवाओं में जाकर देश के लिये प्राण न्यौच्छावर किये, साथ ही छत्तीसगढ़ में देश भर के जिन वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी उनकी शहादत का सम्मान हम 'छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति' के माध्यम से करेंगे।

छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति में शहीदों की नामावली सूची की दीवार, मेमोरियल टावर एवं वीवीआइपी मंच भी तैयार किया जाएगा । शहीदों की नामावली सूची की दीवार का निर्माण ब्राउन मार्बल से एवं शहीदों के नाम को उसी मार्बल में खुदाई कराकर लिखा जाएगा। यह दीवार लगभग 25 फीट ऊंची एवं लगभग 100 फीट की लंबाई के अर्धचंद्राकार रूप में रहेगी इस दीवार की मोटाई 3 फीट होगी। मेमोरियल टावर की स्थापना अर्धचंद्राकार दीवार के सामने बलुआ पत्थर ब्राउन व्हाइट मार्बल ग्रेनाइट से की जाएगी। इसके शीर्ष में स्मृति चिन्ह का निर्माण कराया जाएगा । मेमोरियल टावर के सामने आधार पर राइफल एवं हेलमेट प्रतीक चिन्ह के रूप में रहेगा। इसी प्रतीक चिन्ह के सामने छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति प्रज्वलित होगी जो भूमिगत पाइप लाइन के माध्यम से ईंधन सप्लाई द्वारा 24 घंटे प्रज्वलित होगी।

मेमोरियल टावर के ठीक सामने किलानुमा दो मंजिला भवन का निर्माण कराया जाएगा जिस भवन के आधार की लंबाई 150 फीट एवं चैड़ाई 90 फीट होगी इस भवन की ऊंचाई 40 फीट होगी उक्त भवन के सामने 16 बिगुलरों के खड़े होने के लिए 16 गुंबदों का निर्माण कराया जाएगा। इस भवन के प्रथम तल पर शहीदों की चित्र प्रदर्शनी एवं द्वितीय तल पर शस्त्र प्रदर्शनी रखी जाएगी। इस इकाई में प्रतिवर्ष 21 अक्टूबर को आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय पुलिस स्मृति दिवस के दौरान सम्मिलित शहीदों के परिजनों के ठहरने हेतु सर्व सुविधा युक्त मेस एवं आवासीय कमरों का निर्माण कराया जाएगा। मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की है कि शीघ्र ही छत्तीसगढ़ अमर जवान ज्योति देश प्रदेश के एक गौरव स्थल के रूप में स्थापित हो जायेगी।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना 21 फरवरी तक सभी शहरों में शुरू की जाएगी

गणतंत्र दिवस पर की गई मुख्यमंत्री की घोषणा पर तत्काल शुरू हुआ अमल

42 प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण निःशुल्क होंगे और दवाईयां भी निः शुल्क मिलेंगी

रायपुर ब्यूरो

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस गणतंत्र दिवस पर राज्य के सभी शहरों की स्लम बस्तियों में रहने वालों को एक बड़ी सौगात दी है। अब यहां के रहवासियों को इलाज के लिए अस्पताल जाने या खून की जांच और अन्य स्वास्थ्य परीक्षण के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा। अब उनके इलाके में मोबाइल मेडिकल यूनिट चिकित्सक के सहित खड़ी रहेगी, जहां 42 प्रकार के टेस्ट की निःशुल्क सुविधा भी होगी और निःशुल्क दवाईयां भी मिलेंगी। इसके लिए ''मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना'' सभी 169 शहरों में शुरू करने की घोषणा की गई है। पूर्व में यह योजना राज्य के सभी 14 नगर पालिक निगम में 1 नवम्बर 2020 से सफलता पूर्वक संचालित हो रही थी। इस योजना के लाभ को देखते हुए मुख्यमंत्री ने सभी शहरों में इसे लागू करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय कोरोना महामारी के मद्देनजर और भी कारगर साबित होगा, क्योंकि चिकित्सक से मिलने लोगों को अब अस्पताल नहीं जाना पड़ेगा।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के शुरू होने से समाज के सभी वर्गों को इसका लाभ मिलेगा। हर गरीब और जरूरतमंद व्यक्ति चाहता है कि जब वह बीमार पड़े तो उसे अपने इलाज के लिए भटकना न पड़े। छोटी-छोटी बीमारी के लिए अपने काम धंधे बंद कर डाक्टरों से अपॉइंटमेंट लेना और कतार में लग कर इलाज कराने से हर कोई बचना चाहता है। लोगों की जरूरतों को ध्यान रख छत्तीसगढ़ में शुरू की गई मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना अब इन्हीं उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूरा कर रही है।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना

वर्तमान में राज्य के 14 नगरीय निकायों में 60 मोबाइल मेडिकल यूनिट (एमएमयू) के माध्यम से योजना का क्रियान्वयन संबंधित जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में किया जा रहा है। मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद वर्तमान में सेवारत 60 एमएमयू में अतिरिक्त 60 एमएमयू शामिल किए जाएंगे। इस तरह से प्रदेश के 169 शहरों में 120 एमएमयू के माध्यम से योजना का संचालन किया जाएगा। मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद योजना के महत्व को देखते हुए इसे 21 फरवरी 2022 तक प्रारंभ करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के प्रति नागरिकों के लगाव को

देखें तो योजना के अंतर्गत अभी तक 20 हजार 928 कैंपों का आयोजन मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से किया जा चुका है। इन कैंपों में 14 लाख 64 हजार 195 मरीज अपना इलाज कराकर स्वस्थ हो चुके हैं। एमएमयू में इलाज के लिए एम.बी.बी.एस. डाक्टर की पदस्थापना होती है। एमएमयू की प्रयोगशाला में कुल 42 प्रकार के टेस्ट नि:शुल्क होते हैं। अभी तक 2 लाख 75 हजार 388 मरीज मुफ्त प्रयोगशाला से लाभांवित हो चुके हैं। एमएमयू में कुल 285 प्रकार की दवाइयां मुफ्त वितरण के लिए मौजूद होती हैं। इससे अभी तक 12 लाख 19 हजार 523 मरीजों ने मुफ्त दवा वितरण का लाभ लिया है। मरीजों को दवाइयों का वितरण डॉक्टर की पर्ची के आधार पर फार्मासिस्ट द्वारा किया जाता है।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत एमएमयू में मरीजों की जांच की पूरी प्रक्रिया कंप्यूटराइज्ड की गई है। मरीजों का पंजीयन, डॉक्टर की पर्ची और फार्मासिस्ट द्वारा दवा वितरण का कार्य पूरी तरह कंप्यूटराइज्ड है। प्रक्रिया में कहीं चूक ना हो और मरीजों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके इसके लिए सीनियर विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा इसका आडिट भी किया जाता है।

इस सेवा विस्तार से राज्य के 169 शहरों में 120 एमएमयू के माध्यम से प्रतिमाह लगभग 2 हजार 880 कैंप आयोजित होंगे और लगभग 1 लाख 80 हजार मरीजों का गुणवत्तापूर्ण इलाज संभव हो सकेगा। सुविधा विस्तार के लिए शासन द्वारा सेवा प्रदाता चयन की कार्यवाही सभी जिलों में पूर्ण कर ली गयी है और बसों में एमएमयू के लिए अस्पताल की सुविधाएं विकसित करने हेतु निर्माण कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है। इसके साथ ही कैंप प्लानिंग, डाक्टर एवं स्टाफ की ड्यूटी रोस्टर, दवा वितरण आदि व्यवस्थाओं की तैयारियां सभी शहरों में प्रगति पर हैं।

कैलारस चीनी मिल : अरबों रुपए की 200 बीघा जमीन को हड़पने का षड़यंत्र

हरिओम गौड़ मुरैना

डेढ़ दशक से बंद पड़े कैलारस चीनी मिल को चालू कराने का वादा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के अलावा केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर व ज्योतिरादित्य सिंधिया भी विधानसभा चुनावों में कर चुके हैं, लेकिन अब सरकार के पास चीनी मिल चलाने के लिए कोई बजट नहीं है। ऐसे में चीनी मिल पर बकाया करीब 35 करोड़ रुपये की देनदारियों को चुकाने के नाम पर चीनी मिल की मशीन व अन्य ढांचे को भंगार में बेचने की तैयारी है। यह कवायद शकर मिल के पूर्व कर्मचारी व गन्ना सप्लाई करने वाले किसानों के भुगतान के लिए नहीं हो रही, बल्कि गन्ना मिल से जुड़ी अरबों रुपये कीमत की 200 बीघा जमीन को हड़पने का षड़यंत्र है।

बंद पड़े कैलारस चीनी मिल के पास 200 बीघा से ज्यादा बेशकीमती जमीन है। इसमें से 40 बीघा में फैक्ट्री (चीनी मिल), दफ्तर व कर्मचारियों का अवासीय परिसर है। फैक्ट्री से सटकर 50 बीघा और पड़ोसी लोलरकापुरा में 110 बीघा से ज्यादा जमीन है, इस 160 बीघा जमीन को ठेके पर देकर कैलारस सहकारी शकर मिल प्रबंधन यहां खेती करवाता है, जिसकी आमदनी से सुरक्षाकर्मियों के वेतन व अन्य खर्च निकल आते हैं।लंबे समय से आरोप लग रहे हैं कि इस बेशकीमती जमीन को मिट्टी के मोल हथियाने के लिए चीनी मिल का अस्तित्व मिटाने का षड़यंत्र 10 से 12 साल से चल रहा है।

यह आरोप इसलिए भी दमदार दिख रहे हैं, क्योंकि राज्य परिवहन निगम के कर्मचारियों को भुगतान के नाम पर मुरैना व पोरसा शहर के बस स्टैण्डों की जमीन बेहद गोपनीय ढंग से औने-पौने दामों में बिकी है। ग्वालियर-चंबल अंचल में इस तरह कहीं और जमीनों को नहीं बेचा गया है, यह खेल मुरैना में बीते साल फरवरी से शुरू हुआ है। इसी के तहत चीनी मिल को कबाड़ा घोषित करके, आनलाइन नीलामी में बेचने की तैयारी है। फैक्ट्री की आनलाइन बोली की प्रक्रियाएं आज यानी 4 फरवरी से शुरू हो रही हैं। दूसरी ओर चंबल-ग्वालियर के किसान व व्यापारी 35 करोड़ की देनदारियों के कारण बंद कैलारस चीनी मिल को चलाने के लिए 47 करोड़ रुपये जुटाने और पांच हजार हेक्टेयर में गन्ना की खेती करने का ऐलान कर रहे हैं,

जिससे बंद मिल का पहिया फिर से घूम जाए। चीनी मिल नीलामी की प्रक्रिया 8 फरवरी को पूरी होगी। अब देखना है कि सरकार इसे कबाड़ा बनाकर नीलाम कर देती है या फिर किसान-व्यापारी चंदा करने अपने खर्च से कैलारस चीनी मिल के बंद पहियों को घुमाएंगे।

कैलारस चीनी मिल पर 35 करोड़ रुपये की देनदारी है। इसमें 520 से ज्यादा कर्मचारियों के वेतन, प्रोवीडेंट फंड का करीब 20 करोड़ से अधिक, फैक्ट्री को गन्ना सप्लाई करने वाले किसानों और मण्डी बोर्ड के 5 करोड़ से ज्यादा, तीन करोड़ रुपये राज्य सरकार के अलावा केंद्रीय सहकारी बैंक व अन्य प्राइवेट संस्थाओं व बैंक लोन के मिलाकर कुल 35 करोड़ रुपये चुकाने हैं। जबकि फैक्ट्री की बंद पुरानी मशीनों, टिनशेड व अन्य ढांचा जो नीलाम होने वाला है, उसका सरकारी मूल्य 2 करोड़ 78 लाख रुपये तय हुआ है।

यानी आनलाइन बोली 2.78 लाख से शुरू होगी, यदि सरकार द्वारा तय राशि से दोगुने में यानी करीब 5 करोड़ की चीनी मिल बिकती है, तो 35 करोड़ की देनदारियों के मुकाबले 5 करोड़, ऊंट के मुंह में जीरे की कहावत जैसी है। ऐसे में फैक्ट्री के बाद उससे जुड़ी 200 बीघा जमीन की नीलामी होना तय है। ठीक वैसे ही जैसे दिसंबर महीने में 67 करोड़ रुपये में मुरैना शहर का पुराना बस स्टैण्ड और फरवरी 2021 में पोरसा कस्बे का बस स्टैण्ड 16 करोड़ रुपये में मप्र राज्य परिवहन निगम के कर्मचारियों के बकाया चुकाने के नाम पर बेच दिए गए। जबकि यह बस स्टैण्ड मुरैना व पोरसा के बीचोंबीच हैं, इन दोनों की जमीन 250 करोड़ रुपये से ज्यादा कीमत की है, जिसे महज 73 करोड़ रुपये में बेच दिया गया और इन जमीनों को खरीदने वाले राजनीतिक रसूख वाले लोग या फिर बड़े नेताओं के बेहद करीबी हैं।

कैलारस चीनी मिल को फिर से शुरू करने का ऐलान बीते तीन विधानसभा और 2019 में हुए उप चुनाव में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान कर चुके हैं। केंद्रीय मंत्री सिंधिया जब कांग्रेस में थे तब 2018 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने भी वादा किया था, कि कांग्रेस की सरकार बनी तो चीनी मिल को फिर शुरू किया जाएगा। इतने वादों के बीच इस मिल को चलाने का कागजी प्रयास सिर्फ एक बार, साल 2017 में किया था। तब सहकारिता विभाग के तात्कालीन प्रमुख सचिव ने तब के चंबल संभाग आयुक्त को पत्र लिखकर एक्सप्रेशन आफ इंट्रेस्ट का एक नोटिस प्रकाशित कराने के निर्देश दिए थे, जिससे कैलारस मिल को पीपीपी माडल पर चलाया जा सके। इसके तहत इच्छुक उद्योगति से मिल प्रबंधन का अनुबंध होता, लेकिन यह प्रयास कागजों से बाहर ही नहीं निकले।

कुछ बड़े नेताओं और भू-माफियाओं की नजर 10 साल से कैलारस चीनी मिल की जमीन पर है। यह मिल चालू होने की स्थिति में है, पर वह शुरू नहीं होने दे रहे। इसी षड़यंत्र में इसकी नीलामी हो रही है। मशीनरी व ढांचे को बेचने के बाद जमीन खाली हो जाएगी, फिर उसे भी कर्ज चुकाने के नाम पर बेच दिया जाएगा और इसे खरीदने वाले लोग पहले से तय कर दिए गए है, ठीक पोरसा व मुरैना बस स्टैंड की तरह। सोहनलाल धाकड़ जनपद अध्यक्ष, कैलारस -चीनी मिल को षड़यंत्र के तहत बंद किया गया है। जिन किसानों का फैक्ट्री पर उधार है वह अपना रुपया छोड़ने तैयार हैं, उन्हें भुगतान नहीं चाहिए, बस सरकार फैक्ट्री शुरू करा दे। जो किसान-व्यापारी अपने खर्च पर चलाने तैयार हैं, उन्हें अवसर दिया जाना चाहिए। हर चुनाव में मुख्यमंत्री घोषणा करते है, तो फिर अब इसे कबाड़े में नीलाम क्यों किया जा रहा है।

हमारा न्यू मार्केट

मुकुंद फाटक

अभी कल ही की बात है कि मैं परिवार के साथ लंबे अरसे के बाद न्यू मार्केट गया था। कितना बदल गया है सब कुछ ! ऐसा लगता है हम किसी बड़े महानगर के बड़े बाजार में आ गए हैं। मैंने जब से होश संभाला है तब से मैं न्यू मार्केट जा रहा हूं। बचपन में मां पिताजी के साथ न्यू मार्केट में कागज की फिरकनी और रंगीन चश्मा खरीदने की यादें आज भी दिमाग में ताजा है। फिर जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे वैसे स्कूल की कॉपी किताब या अन्य कुछ सामान लेने अकेले ही न्यू मार्केट जाना होता था।

बड़ा होकर जब ग्रेजुएशन में पढ़ने लगा तब भी रोज शाम को न्यू मार्केट जाना जीवन का एक हिस्सा सा बन गया था। चाहे ज्ञान भारती से ड्राइंग और स्टेशनरी का सामान लेना हो या फिर हॉस्टल के दोस्तों से न्यू मार्केट में मिलकर सेशनल की अदला बदली करनी हो। न्यू मार्केट मानो जरूरत की सभी चीजें मिलने के साथ-साथ यार दोस्तों के मिलने मिलाने का स्थान भी हो गया था। ग्रहस्थ आश्रम में आने के बाद तो आए दिन परिवार की सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए न्यू मार्केट जाना ही पड़ता था।

भोपाल के राजधानी बनाने के बाद ही न्यू मार्केट का विकास प्रारंभ हुआ। सन 1965 के आसपास न्यू मार्केट के सामने और पीछे की लाइन में अलग-अलग प्लॉट लोगों को दिए गए। जिस पर सामान्यतया लोगों ने नीचे दुकान ऊपर मकान का निर्माण किया। उस समय सारी दुकाने ना बनी होने के कारण बीच-बीच के खाली प्लॉटों में से भी न्यू मार्केट के अंदर जाना आना संभव होता था। अंदर ठेलों पर सब्जी और अन्य फुटकर सामान मिला करता था। कुछ वर्षों बाद नगर निगम द्वारा सब्जी बेचने हेतु चबूतरो और उसके ऊपर शेड का निर्माण नहीं किया गया। जो बाद में शहरीकरण के बढ़ते हुए दबाव के कारण छोटी-छोटी दुकानों में तब्दील हुआ। जिन्हें आज तोड़कर नगर निगम द्वारा बहु मंजिली दुकानों का निर्माण, चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है।

जब भी घर पर कोई मेहमान आते, तो उनको न्यू मार्केट अवश्य घूमना होता था। सभी लोग प्राय: यह कहते थे की इस तरीके का मार्केट और कहीं देखने में नहीं आता। इसकी वजह शायद इसका अपने आप में एक एंक्लोज्ड स्वरूप है। इस छोटे से मार्केट में सभी प्रकार की चीजें प्राय: उपलब्ध भी होती है। अत: एक ही जगह आने से व्यक्ति के सारे काम हो जाते हैं, यह इसकी विशेषता है। यही वजह है की बढ़ते हुए भोपाल शहर में अपने मीलों दूर स्थित निजी मकान में रहने जाने के बाद भी, लोगों को न्यू मार्केट अपनी ओर आकर्षित करता रहता है।

बचपन से फ्रैंक रोज, मूलचंद और अग्रवाल मेडिकल की दवाई खा कर ही हम स्वस्थ होते आए हैं। घरों घरों में शुरू से ही मंगल, गोयल, कैपिटल किराना से ही महीने का सामान आता था। अरुणोदय प्रकाशन, कॉलेज बुक स्टोर और ज्ञान भारती की ही किताबें और स्टेशनरी का उपयोग कर हम लोग जीवन में अच्छी शिक्षा पा सके और एक सम्मानजनक जीवन जी सकें। हमने भी भावे साहेब की सेंट्रल डेरी और पंजाब डेरी का घी खाया है जनाब। बॉम्बे, कलकत्ता और ओके हेयर ड्रेसर ने बचपन से हम सब लोगों को राजेश खन्ना और देवानंद जैसी हेयर स्टाइल रखने में भरपूर मदद कर हमारी खूबसूरती में चार चांद लगा दिए, इसमें कोई शक नहीं। इन दुकानों पर बाल काटने के साथ-साथ पत्तल दोने बेचने का गणित, मैं आज तक समझ नहीं पाया खैर। भला हम सबको अच्छे परिधान पहनाने में विजय रेडीमेड, नवरंग, विमल साड़ी एंपोरियम और प्रकाश वस्त्र भंडार जैसे प्रतिष्ठान भी कैसे पीछे रह सकते थे ?

ग्रेजुएशन में पढ़ने के दौरान इंडियन कॉफी हाउस में खाया हुआ डोसा और इडली जैसा स्वाद, आज कहां मिलता है। कड़क सफेद झक कपड़ों में पीतल की थाली का ट्रे लेकर बैरे क्या फुर्ती से अपने ग्राहकों को डोसा इडली सर्व किया करते थे। पेट पर बंधे हुए पट्टे में से माचिस निकालकर झटपट सिगरेट सुलगाने में भी उन्हें महारत हासिल थी।

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गई आंखों की तंदुरुस्ती बरकरार रखने में विनायक, खन्ना और प्रवीण ऑप्टिशियन ने कोई कसर नहीं रखी। घर में कोई तीज त्यौहार हो तो भला बृजवासी, अन्नपूर्णा या दिल्ली स्वीट हाउस की मिठाई से कैसे कोई इंकार कर सकता था। अब तो सरकार ने ट्रैफिक के दबाव को देखते हुए टॉप एंड टाउन के सामने से बाजार में प्रवेश करना प्रतिबंधित कर दिया है। परंतु एक जमाना था, जब न्यू मार्केट में सरदारजी की लिटिल हट के छोले भटूरे या शर्मा जी की चाट खा कर लगी हुई मिर्ची को टॉप एन टाउन के सामने खड़े होकर आइसक्रीम से शांत कर, बनारसी पान की मुखशुद्धि के बाद ही घर जाना होता था। मैं यह भी नहीं भूला हूं कि महीने के आखिरी दिनों में दिल्ली स्वीट हाउस या विजय टी स्टाल की चाय और ठेले पर मिलने वाली गरमा गरम सिकी हुई मूंगफली से भी संतोष कर लौटना पड़ता था।

रंग महल और संगीत सिनेमा में नई रिलीज हुई पिक्चर को 4 दिन बाद स्टूडेंट कंसेशन पर देखना भला कहीं और संभव था क्या ? बाहर निकलते ही पान की दुकान से उसी पिक्चर के गानों की किताब भी हममें से बहुतों ने खरीदी होगी।

न्यू मार्केट में सरकार भी अपने शोरूम खोलने में पीछे नहीं रही। सहकारी बाजार से लेकर खादी ग्रामोद्योग, मृगनयनी आदि सभी ने अपने अपने शोरूमों के माध्यम से जनता को सभी प्रकार के परिधान समय-समय पर आकर्षक छूट के साथ उपलब्ध कराए हैं, इससे आप सभी सहमत होंगे।

सन 1969 में हुए बैंकों के व्यापक राष्ट्रीयकरण के बाद न्यू मार्केट में सभी बैंकों की शाखाएं एक के बाद एक खुलती ही चली गई। इसी कड़ी में भोपाल कोऑपरेटिव सेंट्रल बैंक और अपेक्स बैंक भी समय के साथ जुड़ गए। मुझे याद है कि भोपाल को ऑपरेटिव सेंट्रल बैंक की शाखा का उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित श्यामाचरण शुक्ल द्वारा और अपेक्स बैंक का उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद द्वारा किया गया था। अपने जमाने के सबसे ऊंचे अपेक्स बैंक के भवन ने तो न्यू मार्केट को एक विशिष्ट पहचान देने का काम किया है।

जिस तरह से हम लोग अपने बाल्यकाल से वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में आ गए हैं। ठीक उसी तरह न्यू मार्केट भी अपनी दिनों दिन बढ़ती उम्र के साथ नई-नई ऊंचाइयों को छू रहा है। मांग के अनुसार इसका दायरा बढ़ता ही जा रहा है।

तथाता का अर्थ है

मृगेंद्र सिंह/वरिष्ठ अधिवक्ता(सर्वोच्च न्यायालय)

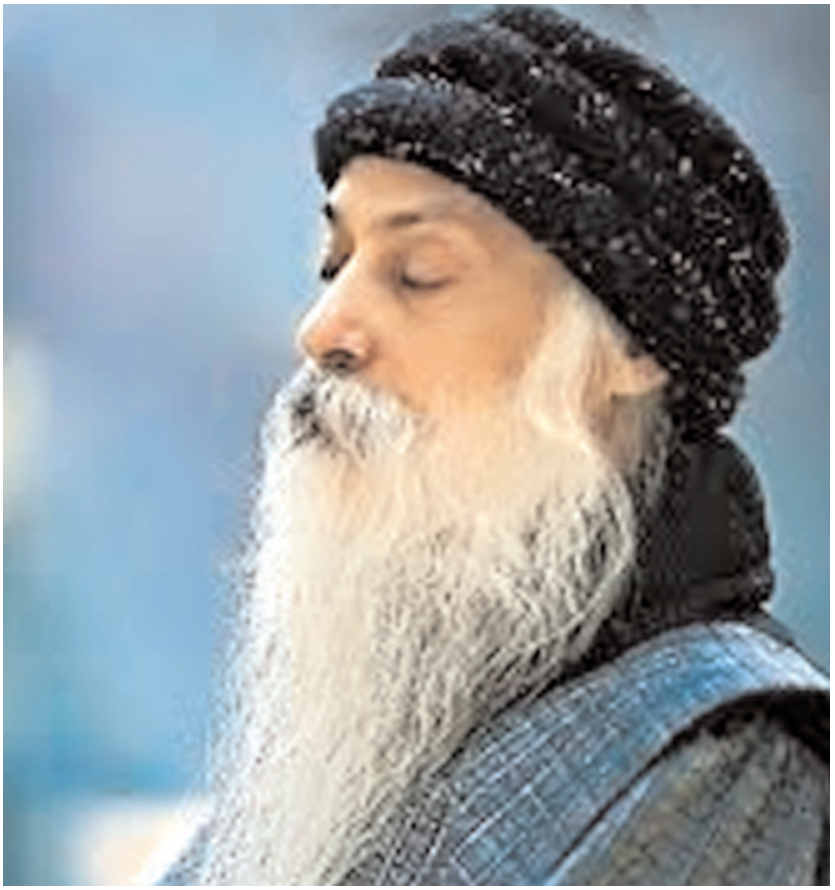

इस जगत में ऐसे रहना जैसे तुम अकेले हो। न कुछ झगड़ने को, न कुछ कलह करने को, न कोई द्वंद्व, न कोई संघर्ष। तथाता का अर्थ है, जैसी चीजें हो जायें वैसी स्वीकार कर लेना। मैंने सुना है, एक झेन फकीर रिंझाई एक रास्ते से गुजर रहा था। एक आदमी आया और उसने जोर से लात उसकी पीठ में मारी। तो फकीर गिर गया, और वह आदमी तो भाग कर चला गया। फकीर के साथ एक मित्र और थे। रिंझाई उठा और जहां से बात टूट गई थी, वहीं से उसने फिर शुरू कर दी, वह फिर चलने लगा।

वह आदमी बहुत हैरान हुआ, जो साथ था। उसने कहा, सुनिए, मैं तो भूल ही गया कि हम क्या बात कर रहे थे। और अब मैं उसमें उत्सुक भी नहीं हूं।

पहले मुझे यह बताइये, यह क्या हुआ

यह आदमी आपको लात मार कर गिरा गया, आपने कुछ कहा नहीं !%

रिंझाई ने कहा, %यह उसकी समस्या है।

इससे अपने को क्या लेना-देना

यह उसकी कुछ परेशानी है भीतरी, वह जाने ! इतना पक्का है कि कोई लात मारेगा तो बूढ़ा आदमी हूं, शरीर गिर जाएगा। ऐसा वस्तुओं का स्वभाव है। वह जवान था, मैं बूढ़ा हूं। उसने लात मारी, मैं गिर गया। लात क्यों मारी यह वह सोचे, यह उसकी चिंता है। वह अपनी रात खराब करे। इससे मेरा कुछ लेना-देना नहीं। इतना मैं कहता हूं कि शरीर कमजोर हो गया। शरीर कमजोर हो जाता है।%

ऐसी भाव-दशा का नाम तथाता है।

इसलिए बुद्ध को तथागत नाम दिया है। %तथागत% का अर्थ है, जिसका पूरा जीवन तथाता हो गया। तुम कुछ भी कहो, वे कहेंगे हां। ऐसा वस्तुओं का स्वभाव है। और अन्यथा करने की कोई आकांक्षा नहीं है। जैसा है वैसा पूर्ण स्वीकृत। टोटल एक्सेप्टेंस तथाता है।

जो भी हो जीवन में उसको स्वीकार कर लेना और कहना- ऐसा जीवन का स्वभाव है। तुम धीरे-धीरे पाओगे तुम्हारी सब अशांति खो गई।

अशांत होने का मतलब ही यह होता है कि तुम स्वीकार नहीं करते। अशांत होने का मतलब यह होता है कि तुम कहते हो, कुछ इससे भिन्न हो सकता था। अशांत होने का मतलब है कि तुम कहते हो कि अभी कुछ दिन और जवान रह सकता था, कि इससे सुंदर स्त्री मिल सकती थी, कि इससे अच्छा लड़का हो सकता था, कि इससे बड़ा मकान हो सकता था, कि लोग इससे ज्यादा मेरा सम्मान करते। तुम यह मान कर चलते हो, इससे भिन्न हो सकता था; तो तुम्हारे जीवन में अशांति रहेगी।

तथाता का अर्थ है, जो हो गया वही हो सकता था। तुमने जो स्त्री चुनी है पत्नी के लिए, उसी स्त्री को तुम चुन सकते थे इसलिए चुनी है। यह कुछ अकारण नहीं हो गया। तुम जिस बच्चे को जन्म दे सकते थे उसको ही जन्म दिया है। वह कुछ अकारण आसमान से नहीं टपक गया। इसलिए अब रोज छाती मत पीटो, कि यह बुद्धू है, कि बेईमान है, कि चोर है। तुमसे चोर पैदा हो सकता था, चोर पैदा हो गया। तुम्हें जो मिल सकता था वह मिल गया है। तुम्हें जो नहीं मिल सकता था वही नहीं मिला। तथाता का अर्थ है, अन्यथा की कोई आकांक्षा नहीं है। जैसा हो गया है उससे मैं राजी हूं। क्योंकि अन्यथा हो ही नहीं सकता।

तब तुम कैसे अशांत होओगे
तब कैसा तनाव
तब तुम्हें ध्यान करने की क्या जरूरत

बुद्ध ने कहा है, तथाता को तुम जो राजी हो गये, तो ध्यान व्यर्थ है।

क्या करोगे ध्यान करके! कैसी पूजा
कैसी प्रार्थना क्या करना है

सब अशांति से बचने के मार्ग हैं। लेकिन तथाता तो अशांति को जड़ से काट देती है, बचने का कोई सवाल ही नहीं है। तथाता परम-स्थिति है।

ओशो
दीया तले अंधेरा

किसानों को राहत, महिलाओं को ताकत... राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अभिभाषण में गिनाए सरकार के काम

नई दिल्ली। किसानों को राहत, महिलाओं को ताकत... राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अभिभाषण में गिनाए सरकार के काम संसद का बजट सत्र आज से शुरू हो गया है। संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संबोधित किया। राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि देश में 80 फीसदी किसान छोटे किसान ही हैं, जिनका देश के विकास में अहम योगदान है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से 11 करोड़ से अधिक किसान परिवारों को 1 लाख 80 हजार करोड़ रुपये दिए गए हैं। इस निवेश से कृषि क्षेत्र में आज बड़े बदलाव दिखाई दे रहे हैं।

राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि महिला सशक्तिकरण मेरी सरकार की उच्च प्राथमिकताओं में से एक है। बेटे-बेटी को समानता का दर्जा देते हुए मेरी सरकार ने महिलाओं के विवाह के लिए न्यूनतम आयु को 18 वर्ष से बढ़ाकर पुरुषों के समान 21 वर्ष करने का विधेयक भी संसद में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि मैं देश के उन लाखों स्वाधीनता सेनानियों को नमन करता हूं, जिन्होंने अपने कर्तव्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और भारत को उसके अधिकार दिलाए। आजादी के इन 75 वर्षों में देश की विकास यात्रा में अपना योगदान देने वाले सभी महानुभावों का भी मैं श्रद्धा-पूर्वक स्मरण करता हूं।

कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में भारत का सामर्थ्य दिखा: राष्ट्रपति ने कहा कि कोरोना वायरस से उत्पन्न वैश्विक महामारी का ये तीसरा वर्ष है, इस दौरान हमने भारत के लोगों की लोकतांत्रिक मूल्यों में आस्था, अनुशासन और कर्तव्यपरायणता को और मजबूत होते देखा है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में भारत के सामर्थ्य का प्रमाण वैक्सीनेशन प्रोग्राम में नजर आया है। हमने एक साल से भी कम समय में 150 करोड़ से भी ज्यादा वैक्सीन डोज लगाने का रिकॉर्ड पार किया। आज हम पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा वैक्सीन डोज देने वाले अग्रणी देशों में से एक हैं।

प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इनफ्रास्ट्रक्चर मिशन सराहनीय कदम: कोविंद ने कहा, सरकार की ओर से 64 हजार करोड़ रुपए की लागत से शुरू किया गया प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इनफ्रास्ट्रक्चर मिशन एक सराहनीय उदाहरण है। इससे न केवल वर्तमान की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी, बल्कि आने वाले संकटों के लिए भी देश को तैयार किया जा सकेगा। राष्ट्रपति ने कहा, मेरी सरकार की संवेदनशील नीतियों के कारण देश में अब स्वास्थ्य सेवाएं जन साधारण तक आसानी से पहुंच रही हैं। 80 हजार से अधिक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स और करोड़ों की संख्या में जारी आयुष्मान भारत कार्ड से गरीबों को इलाज में मदद मिली है।

कोई गरीब भूखा न रहे....

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद कहा कि कोरोना के इस महासंकट में हमने बड़े-बड़े देशों में खाद्यान्न की कमी और भूख की परेशानी देखी है, लेकिन मेरी संवेदनशील सरकार ने इस बात का पूरा प्रयास किया कि 100 साल के इस सबसे बड़े संकट में कोई गरीब भूखा न रहे। संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में राष्ट्रपति ने कहा, डिजिटल इंडिया और डिजिटल इकॉनमी के बढ़ते प्रसार के संदर्भ में देश के PI प्लेटफॉर्म की सफलता के लिए मैं सरकार के विज़न की प्रशंसा करूंगा। दिसबंर 2021 में देश में 8 लाख करोड़ रुपए से ज़्यादा का लेन-देन PI के माध्यम से हुआ है।

तीन तलाक को अपराध घोषित कर समाज को कुप्रथा से मुक्त किया: कोविंद ने कहा कि मेरी सरकार के नीतिगत निर्णय और प्रोत्साहन से विभिन्न पुलिस बलों में महिला पुलिस-कर्मियों की संख्या में, 2014 के मुकाबले दोगुनी से ज्यादा बढ़ोतरी हो चुकी है। उन्होंने कहा, सरकार ने तीन तलाक को कानूनन अपराध घोषित कर समाज को इस कुप्रथा से मुक्त करने की शुरुआत की है। मुस्लिम महिलाओं पर केवल मेहरम के साथ ही हज यात्रा करने जैसे प्रतिबंधों को भी हटाया गया है।

उन्होंने कहा, मेरी सरकार की नीतियों की वजह से आज भारत उन देशों में है जहां इंटरनेट की कीमत सबसे कम है तथा स्मार्ट फोन की कीमत भी सबसे कम है। इसका बहुत बड़ा लाभ भारत की नौजवान पीढ़ी को मिल रहा है। सरकार के निरंतर प्रयासों से भारत एक बार फिर विश्व की सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है। इस वित्त वर्ष के पहले 7 महीनों में 48 बिलियन डॉलर का विदेशी निवेश आना, इसका प्रमाण है कि अंतरराष्ट्रीय निवेशक भारत के विकास को लेकर आश्वस्त हैं।

देश की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित होकर काम जारी: राष्ट्रपति ने कहा कि मेरी सरकार देश की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित होकर काम कर रही है। सरकार की नीतियों की वजह से डिफेंस सेक्टर में, विशेषकर रक्षा उत्पादन में, देश की आत्म-निर्भरता लगातार बढ़ रही है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ 83 एलसीए तेजस फाइटर एयरक्राफ्ट के निर्माण के लिए करार किए गए हैं। सरकार ने ऑर्डिनेन्स फैक्ट्रियों को 7 डिफेंस क्ष्स का रूप देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। राष्ट्रपति ने कहा, हमने अपने पड़ोसी देश अफगानिस्तान में अस्थिरता और नाजुक हालात को देखा है, भारत ने इन परिस्थितियों में मानवता को सर्वोपरि रखते हुए ऑपरेशन देवी शक्ति को संचालित किया। हमने हमारे कई नागरिकों और कई अफगान हिन्दू, सिख, अल्पसंख्यकों को काबुल से सफलतापूर्वक एयरलिफ्ट किया।

2023 मे वर्ल्ड कप है, क्या हम तैयार है ?

विजय सिंह
क्रिकेट के जानकार

इंडिया आज वनडे मे ऐसे हालात मे है जहां राहें बहुत कठिन है। भारत, एकदिवसीय श्रृंखला हार गया जहां उसे जीतना था। मैंने पिछले 2 दशक में बहुत कम बार देखा है, जब एक मैच भी नहीं जीत पाए। आज टीम ऐसा जगह टी पॉइंट पर खड़ी है जहां से 2 रास्ते जाते हैं पर कहां जाना है, कुछ पता नहीं। 2019 विश्व कप से टीम का प्रदर्शन नीचे आया, पता नहीं टीम ने वनडे को गंभीरता से क्यों नहीं लिया। 2017 चैंपियंस ट्रॉफी मैच मे हार्दिक पांड्या बड़े खिलाड़ी के रूप में सामने आए। वे 5 साल से फॉर्म फिटनेस से लड़ रहे हैं। युवी, रैना, धोनी को रिटायरमेंट लिए कितने साल हो गए, फिर भी भारत ने मध्य क्रम मैं अभी तक कोई बल्लेबाज नहीं मैनेज किया जो विश्वसनीय हो।

2022 की शुरुआत अच्छी नहीं हुई है, वनडे सीरीज मैं विराट और शिखर ने 2 हाफ सेंचुरी बनाई, पर टीम को 1 मैच भी नहीं जिता पाए। अमूनन विराट मैच खत्म कर के आते हैं, और सूर्य को भी तीसरा वनडे मैच खत्म करके आना था।

वेंकटेश अय्यर सिर्फ 6 महीने पहले विराट से आईपीएल मे ऑटोग्राफ ले रहे थे, पर अच्छी बात है अपने प्रदर्शन के दम पर टीम मैं आ गए। आप उनको बैटिंग ऑलराउंडर खिला रहे हैं पर गेंदबाज के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुझे उनमे कमी नजर आती है। सिर्फ बल्लेबाज के रूप में वो टीम मैं नहीं खेल सकते। हो सकता है जब हार्दिक या जडेजा फ़िट होकर वापसी करे तब हालत ठीक हो।

वर्ल्ड कप मे सिर्फ एक साल है। न्यू प्लेयर्स को आपको कम से कम 20-25 मैच खिलाने पड़ेंगे तब जाकर प्लेयर को एक्सपोजर मिलेगा। अब बहुत मुश्किल है क्योंकि सिर्फ 1 साल मे नए खिलाड़ी को इतने बड़े टूर्नामेंट के लिए सेट नहीं कर सकते। मुझे याद है 2008 मे जब भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट सीरीज के बाद वनडे सीरीज हुई थी तब धोनी ने 2011 विश्व कप को ध्यान रखते हुए, गांगुली / द्रविड़ को साइड लाइन करना शुरू कर दिया था। सोचो, 3 साल पहले से कोर टीम बनाने की शुरुआत की थी ।

अब तो सिर्फ एक साल बचा है वर्ल्ड कप मैं। टीम मैं क्या हो रहा है, पर भारत के लिए ये गिरावट की शुरुआत है। वनडे मैं आप कितने अच्छे गेंदबाजों ले कर आओ , 300 रन तो आजकल आसानी से बनने हैं। पर क्या आपकी टीम ऐसी है की आप 300 चेज़ करो। आज के हालात मे मुश्किल है।

आपके पास गायकवाड़, ईशान किशन, पड्डीकल हैं पर आपको पिछले 1-2 साल मे उन्हे तैयार करना था। शिखर अभी भी ठीक है वनडे के लिए, कम से कम अगले साल विश्व कप के लिए। लास्ट वर्ल्ड कप से इंडिया ने वनडे सीरीज भी कम खेली है,इसलिए फोकस भी कम हो गया है। ऋषभ पंत को परिपक्वता लानी होगी शॉट चयन के लिए। आप 4 नंबर पर ऐसा शॉट नहीं खेल सकते हैं। गेम सेंस अच्छा है उनका, पर ग्राउंड मे इम्प्लीमेंट करना चाहिए। वो कभी आपको अकेले दम पर मैच जिता के जाएंगे पर जिम्मेदारी आना जरूरी है।

दक्षिण अफ्रीका में भारत के लिए श्रृंखला जीत का परीक्षण करने का यह सबसे अच्छा मौका था लेकिन दुर्भाग्य से बल्लेबाजी में आग नहीं लगी, यहां तक कि अच्छे स्कोर भी हमें जीत दिला सकते थे।

यह नाजुक बल्लेबाजी क्रम है। मैं पिछले कुछ वर्षों से टेस्ट मैचों में भारतीय क्रिकेट टीम के बारे में देख रहा हूं। बल्लेबाज शतक बनाना भूल गया। यह गेंदबाज था जिसने हमें ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में श्रृंखला के दौरान जीत दिलाई। लेकिन वे इसे हर बार नहीं कर सकते, बचाव के लिए कुछ रन होने चाहिए।

यह बल्लेबाजी की विफलता है जिसने हमें हार दिलाई। कोहली के कप्तानी से इस्तीफा देने की वजह पहले टी 20 विश्व कप पराजय बतायी जा रही थी और अब टेस्ट सीरीज में प्रोटियाज से हार कोहली के इस्तीफे का मार्ग प्रशस्त करेगी।

तेंदुलकर और धोनी के बाद उन्हें बड़ा स्टारडम मिला है। हां कोहली में अहंकार और स्वाभिमान है, जैसा कि मैं समझता हूं। एक टेस्ट कप्तान के रूप में उनके आँकड़े विश्व क्रिकेट में अब तक के सर्वश्रेष्ठ में से एक हैं, लेकिन वह अपनी शर्तों पर खेलते हैं, कभी भी अपने काम में हस्तक्षेप नहीं चाहते हैं।

फायर है यह फायर- राफेल नडाल के रिकॉर्ड 21वें ग्रैंडस्लैम जीतने पर सचिन तेंदुलकर से लेकर वीरेंद्र सहवाग तक ने ऐसे किया सलाम

नई दिल्ली। स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ने ऑस्ट्रेलियन ओपन 2022 के रूप में अपना 21वां ग्रैंडस्लैम खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। नडाल ने रविवार को मेलबर्न के रॉड लेवर एरेना में खेले गए फाइनल में दो सेट से पिछड़ने के बावजूद शानदार वापसी की और रूस के डेनिल मेदवेदेव को 5 घंटे और 24 मिनट तक चले मैराथन मुकाबले में 2-6, 6-7, 6-4, 6-4, 7-5 से मात दी। नडाल के इस शानदार कमबैक को क्रिकेट जगत ने भी सलाम किया है। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर से वीरेंद्र सहवाग, वीवीएस लक्ष्मण और रविचंद्रन अश्विन जैसे दिग्गज क्रिकेटरों ने उन्हें जीत की बधाई दी है। नडाल रिकॉर्ड 21 ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले दुनिया के पहले मेंस टेनिस खिलाड़ी बन गए हैं। नडाल के फैन सचिन तेंदुलकर ने ट्विटर पर लिखा, यह बिल्कुल शानदार है। कम से कम इसे आश्चर्यजनक तो कह सकते हैं। 2 सेट से पिछड़ने के बाद वापिस करना और अपना 21वां ग्रैंड स्लैम जीतना अविश्वसनीय है। बधाई हो राफेल नडाल। वॉशिंगटन सुंदर ने इसे नडाल का चमत्कार कहा है। वहीं, पाकिस्तान के पूर्व कप्तान राशिद लतीफ ने नडाल को सर्वकालिक महान खिलाड़ी जबकि अश्विन ने महान खिलाड़ी बताया है।

रोहित शर्मा ने पास किया फिटनेस टेस्ट, वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे और टी20 सीरीज के लिए टीम का जल्द होगा ऐलान

नई दिल्ली। रोहित शर्मा सीमित ओवरों में भारत के कप्तान के रूप में वापसी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। क्योंकि भारतीय कप्तान रोहित ने फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। रोहित वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत की वनडे और टी20 सीरीज के लिए चयन के लिए उपलब्ध हैं। रोहित शर्मा बुधवार दोपहर राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में चयन समिति से मुलाकात करेंगे।

सीमित ओवरों के कप्तान को बेंगलुरु के एनसीए में एक अनिवार्य फिटनेस टेस्ट से गुजरना पड़ा, जिसमें वह हैमस्ट्रिंग की चोट से उबर रहे थे। भारत के सीमित ओवरों के कप्तान रोहित शर्मा फिट हैं और अहमदाबाद में तीन वनडे मैचों के साथ 6 फरवरी से शुरू होने वाली छह मैचों की सफेद गेंद की सीरीज में वेस्टइंडीज के खिलाफ टीम का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं।

हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण रोहित को दक्षिण अफ्रीका में भारत की टेस्ट और वनडे सीरीज से बाहर होना पड़ा। भारत के दक्षिण अफ्रीका दौरे से पहले विराट कोहली को भूमिका से बर्खास्त किए जाने के बाद उन्हें भारत के वनडे कप्तान के रूप में नियुक्त किया गया था। हालांकि, रोहित की अनुपस्थिति में, भारत का नेतृत्व केएल राहुल ने किया। हालांकि उनके नेतृत्व में भारत को सीरीज 3-0 से गंवानी पड़ी।

हालांकि इस सप्ताह होने वाली टीम चयन बैठक पर सबकी नजरें रहेंगी। क्योंकि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई सीरीज में कई सीनियर खिलाड़ियों का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में उन पर तलवार लटक सकती है। लेकिन टीम के लिए अच्छी खबर ये है कि बाएं हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका दौरे से बाहर हो जाने के बाद रोहित टीम की अगुवाई करने के लिए तैयार हैं। कैरेबियाई टीम के खिलाफ टी20 मैच 16 से 20 फरवरी तक कोलकाता में होने हैं।

हार्दिक पांड्या की हो सकती है वापसी: हार्दिक पंड्या ने नेट पर गेंदबाजी शुरू कर दी है। वह पूरी क्षमता के साथ गेंदबाजी कर पाएंगे या नहीं यह अभी स्पष्ट नहीं है लेकिन छठे नंबर पर वेंकटेश अय्यर की अनुभवहीनता और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ के यह स्वीकार करने से कि हार्दिक की कमी खली, बड़ौदा के इस खिलाड़ी की वेस्टइंडीज के खिलाफ वापसी का रास्ता साफ हो सकता है।

सूत्र ने कहा, आपको याद रखना होगा कि टी20 विश्व कप के बाद हार्दिक को टी20 टीम से बाहर किया गया था और उसे फिटनेस के कारण आराम नहीं दिया गया था। चयनकर्ता टी20 विश्व कप में उनके लचर प्रदर्शन के बाद उन्हें संदेश देना चाहते थे लेकिन वह अच्छा खिलाड़ी है और उसे लंबे समय तक बाहर नहीं रखा जा सकता। उन्होंने कहा, अगर वेस्टइंडीज के खिलाफ नहीं तो वह श्रीलंका के खिलाफ निश्चित तौर पर वापसी करेगा।

कप्तानी का दबाव नहीं झेल सके केएल राहुल, जानिए दिग्गजों की राय, क्या भविष्य में मिलेगी टीम की कमान?

नई दिल्ली। भारत का दक्षिण अफ्रीका दौरा बेहद निराशाजनक रहा है। पहली बार टेस्ट सीरीज जीतने के इरादे से उतरी भारतीय टीम ने 1-2 से टेस्ट सीरीज गंवा दी और फिर वनडे सीरीज में टीम का प्रदर्शन और नीचे गिर गया, जिसके कारण टीम को 3-0 से सीरीज गंवानी पड़ी। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट और वनडे सीरीज के लिए टीम का ऐलान होने से पहले से ही %कप्तान के पद% को लेकर काफी बवाल मचा और सीरीज के अंत तक इस पर चर्चा जारी है। विराट कोहली की जगह रोहित शर्मा को कप्तान बनाए जाने और फिर केएल राहुल के बतौर कप्तान प्रदर्शन को लेकर बहस शुरू हो चुकी है। चलिए आपके बताते हैं कि दिग्गजों ने राहुल की कप्तानी को लेकर क्या राय दी है और क्या उन्हें भविष्य में टीम की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी ?

केएल राहुल को मिली कप्तानी की जिम्मेदारी

दरअसल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए विराट कोहली को कप्तानी से जबरदस्ती हटा दिया गया था और फिर रोहित शर्मा को कप्तानी सौंपी गई थी, लेकिन रोहित के चोटिल होने के कारण केएल राहुल को जिम्मेदारी दी गई, लेकिन इस सीरीज के नतीजों पर नजर डाले, तो बीसीसीआई का राहुल को कप्तानी देने का फैसला गलत साबित हुआ है। केएल राहुल टीम मैनेजमेंट के भरोसे को जीतने में पूरी तरह विफल रहे हैं। ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि नियमित कप्तान रोहित शर्मा के बाद बीसीसीआई केएल राहुल को ही जिम्मेदारी सौंपेगी या किसी और खिलाड़ी को नया कप्तान बनाया जाएगा।

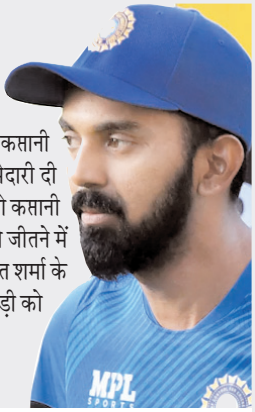

बतौर कप्तान फेल हुए केएल राहुल

क्रिकेट एक्सपर्ट की माने तो केएल राहुल में कप्तानी मैटेरियल नहीं दिखाई दिया है, तो वहीं कुछ दिग्गजों का मानना है कि राहुल अभी कप्तानी की जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार नहीं हैं। वह दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर चार मैचों में कप्तानी करते हुए नजर आए हैं। पहली बार वह इस दौरे पर टेस्ट सीरीज के दौरान विराट कोहली के स्थान पर टीम की कमान संभालते हुए नजर आए थे। लेकिन टीम को इस मैच में 7 विकेट से करारी शिकस्त झेलनी पड़ी थी। हालांकि केएल राहुल के सामने वनडे सीरीज जीतने की बड़ी चुनौती थी।

आईपीएल की नीलामी लिस्ट से टी20 के बेताज बादशाह क्रिस गेल सहित ये खिलाड़ी हुए बाहर, क्या IPL में 42 साल के 'यूनिवर्स बॉस' खेलते नहीं दिखेंगे

नई दिल्ली। आईपीएल 2022 मेगा नीलामी 12 और 13 फरवरी को बेंगलुरु में होनी है। नीलामी से पहले आईपीएल की दो नई टीमें अहमदाबाद और लखनऊ को तीन-तीन खिलाड़ियों को चुनने का मौका दिया गया था और दोनों टीमों ने आधिकारिक तौर पर अपने तीन नए खिलाड़ियों के नामों का ऐलान कर दिया। आईपीएल नीलामी से जुड़ी अपडेट सामने आई है।

नीलामी के लिए इस बार 1214 खिलाड़ियों ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया है, जिनमें 270 कैप्ड और 312 अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं। हालांकि इस लिस्ट से कुछ बड़े नाम गायब हैं, जोकि आईपीएल में इस बार अपनी चमक बिखेरते हुए नजर नहीं आएंगे। टी20 क्रिकेट के यूनिवर्स बॉस क्रिस गेल का नाम बीसीसीआई द्वारा शेयर रजिस्ट्रेशन लिस्ट में नहीं है। जिसका मतलब है कि आईपीएल के 14 सीजन के बाद गेल ने इस साल लीग और आईपीएल नीलामी को छोड़ने का फैसला किया है। गेल ने टी20 विश्व कप के बाद खुद घोषणा की थी कि वह आईपीएल में खेलना जारी रखेंगे, लेकिन बीसीसीआई द्वारा जारी सूची में उनका नाम पंजीकृत खिलाड़ियों की सूची में नहीं है।

मुश्किल में फंसे दक्षिण अफ्रीकी कोच मार्क बाउचर, छिन सकता है कोचिंग पद, जानिए क्यों

नई दिल्ली। *क्रिकेट साउथ अफ्रीका (सीएसए) ने नेशनल टीम के मुख्य कोच मार्क बाउचर के खिलाफ नस्लभेद के आरोपों की अनुशासनात्मक सुनवाई के लिए सीनियर अधिवक्ता टैरी मोताऊ को अध्यक्ष नियुक्त किया है। सामजिक न्याय और राष्ट्र निर्माण (एसजेएन) सुनवाई के दौरान दुर्व्यवहार के लिए आरोपित हुए कोच मार्क बाउचर पर अब अनुशासनात्मक सुनवाई होगी। इस फैसले के बाद अब बाउचर पर कोच पद से बर्खास्त होने का खतरा मंडराने लगा है। बाउचर के अलावा सीएसए के मौजूदा निदेशक ग्रीम स्मिथ और पूर्व बल्लेबाज एबी डिविलियर्स पर अश्वेत खिलाड़ियों के खिलाफ अनुचित भेदभाव का आरोप लगाया था जिसके बाद यह नियुक्ति की गई है। सीएसए ने कहा, 26 जनवरी 2022 को पहली सुनवाई होगी और इसके बाद आगे की तारीखें तय की जाएंगी। एसजेएन सुनवाई के बाद ऐसा करना अनिवार्य था, क्योंकि सुनवाई के दौरान बाउचर सहित कई जिम्मेदार लोगों पर भेदभाव और नस्लवाद के आरोप लगे थे। खासकर बाउचर पर उनके पूर्व साथी पॉल एडम्स ने नस्लभेद के आरोप लगाए थे। 17 जनवरी को इस संबंध में बाउचर के ख़िलाफ एक चार्जशीट फाइल किया गया और इसकी जानकारी बाउचर को भी दी गई। सीएसए इस मामले में हर आरोपों की स्वतंत्र जांच कर ही कोई धारा लगाना चाहता है।*

पाकिस्तानी दिग्गज शोएब अख्तर का दावा- अगर ऐसा होता तो सचिन तेंदुलकर बना लेते 1 लाख रन

नई दिल्ली। पाकिस्तान टीम के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने मॉर्डन डे क्रिकेट पर निशाना साधा है। इसके पीछे का कारण ये है कि शोएब अख्तर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के मौजूदा नियमों से खुश नहीं हैं, क्योंकि ये नियम बल्लेबाजों के पक्ष में हैं। शोएब अख्तर ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल को लपेटने का काम किया है, क्योंकि क्रिकेट के खेल को आईसीसी ने बल्लेबाजों के अनुकूल बना दिया है। तीन डीआरएस, दो नई बॉल और बाउंसरों पर प्रतिबंध लगा रखा है। अख्तर ने अपने यूट्यूब चैनल पर एक और बड़ा दावा करते हुए कहा कि भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर अगर इस दौर में खेलते तो 1 लाख रन बना लेते। उन्होंने कहा, आपके पास दो नई गेंदें हैं। आपने नियम सख्त कर दिए हैं।

आप आजकल बल्लेबाजों को बहुत फायदा देते हैं। अब आप तीन रिव्यू (ष्ठक्रस्र) की अनुमति देते हैं। अगर सचिन के जमाने में हमारे पास तीन रिव्यू होते तो वह 1 लाख रन बना लेते। पाकिस्तानी दिग्गज ने आगे कहा कि उन्हें तेंदुलकर पर दया आती है, क्योंकि उन्होंने तीन अलग-अलग पीढ़ियों के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ खेला। हालांकि, अख्तर ने तेंदुलकर को बहुत मुश्किल बल्लेबाज भी बताया। उन्होंने कहा, मुझे वास्तव में उन पर दया आती है।

मुझे सचिन पर दया आती है कि वह शुरू में वसीम (अकरम) और वकार (यूनिस) के खिलाफ खेले, उन्होंने शेन वार्न के खिलाफ खेला, फिर उन्होंने (ब्रेट) ली और शोएब (अख्तर) का सामना किया, और बाद में उन्होंने अगली पीढ़ी के तेज गेंदबाजों के खिलाफ खेला। इसलिए मैं उन्हें बहुत टफ बल्लेबाज कहता हूं। क्रिकेट को लेकर उन्होंने कहा, आजकल बहुत बल्लेबाजी के अनुकूल क्रिकेट है। इससे पहले, एक बल्लेबाज के रूप में, आप भी तेज गेंदबाजों का आनंद लेते थे, जो आपके बाल उड़ते हुए, बाउंसर करते हुए आपके पास आते थे। ये बातें उन्होंने भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच से बात करते हुए कहीं। इस पर शास्त्री का कहना था, यदि आपको संतुलन बनाना है, तो आपको एक ओवर को 2 बाउंसर तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

बढ़ते COVID-19 मामलों के बीच विवेक रंजन अग्निहोत्री की 'द कश्मीर फाइल्स' की रिलीज़ टली

विवेक रंजन अग्निहोत्री की बहुप्रतीक्षित 'द कश्मीर फाइल्स' का इंतजार COVID-19 महामारी के कारण लंबा रहा है। लेकिन लगता है कि कश्मीरी पंडितों की कहानी को बड़े पर्दे पर देखने के लिए दर्शकों को अभी थोड़ा और इंतजार करना होगा।

मिथुन चक्रवर्ती, अनुपम खेर और पल्लवी जोशी अभिनीत फिल्म के निर्माताओं ने देश में COVID-19 मामलों के बढ़ने के कारण पलायन ड्रामा की रिलीज़ को टाल दिया है। यह फिल्म जिसमें दर्शन कुमार, पुनीत इस्सर और चिन्मय मंडलेकर द्वारा स्पेशल परफॉर्मेंस दी गयी है, इस साल 26 जनवरी को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली थी। सोशल मीडिया पर इस खबर की घोषणा करते हुए, ज़ी स्टूडियोज़ ने भारत के नक्शे का एक क्रिएटिव साझा किया, जिसमें उल्लेख किया गया है, देश में कोविड के मामलों में हुई वृद्धि और कई राज्यों में सिनेमाघरों के आंशिक या पूरी तरह से बंद होने के कारण, हमने फैसला किया है कि हमारी फिल्म द कश्मीर फाइल्स% की रिलीज को टाल दें। आओ मिलकर इस महामारी से लड़ें। मास्क पहनें और सुरक्षित रहें!

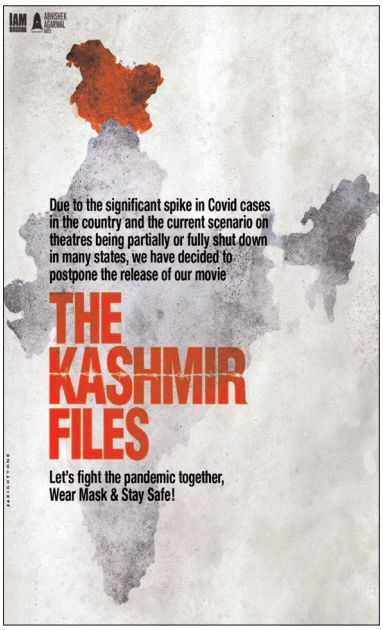

अपने टाइटल पर खरा उतरते हुए, द कश्मीर फाइल्स एक सच्ची कहानी है, जो कश्मीरी पंडित समुदाय के कश्मीर नरसंहार की पहली पीढ़ी के पीड़ितों के वीडियो इंटरव्यू पर आधारित है। यह कश्मीरी पंडितों के दर्द, पीड़ा, संघर्ष और आघात का दिल दहला देने वाला नरेटिव है और लोकतंत्र, धर्म, राजनीति और मानवता के बारे में आंखें खोलने वाले तथ्यों पर सवाल उठाता है।

अपनी पिछली समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म द ताशकेंट फाइल्स के लिए प्रशंसा बटोरने के बाद, जिसने इस साल की शुरुआत में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था, ज़ी स्टूडियोज़ और लेखक-निर्देशक विवेक रंजन अग्निहोत्री ने एक अन्य हार्ड-हीटिंग फिल्म पेश करने के लिए फिर से सहयोग किया है।

विवेक रंजन अग्निहोत्री द्वारा लिखित और निर्देशित, इस ड्रामा में मिथुन चक्रवर्ती, अनुपम खेर, दर्शन कुमार, पल्लवी जोशी, भाषा सुंबली और चिन्मय मंडलेकर जैसे अभिनेताओं की तारकीय भूमिका है। ज़ी स्टूडियोज़ और तेज नारायण अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, पल्लवी जोशी और विवेक रंजन अग्निहोत्री द्वारा निर्मित, विवेक अग्निहोत्री द्वारा लिखित और निर्देशित है।

साजिद नाडियाडवाला की 'बच्चन पांडे' 18 मार्च, 2022 में सिनेमाघरों में होगी रिलीज

शुरुआत में 4 मार्च 2022 में सिनेमाघरों में रिलीज के लिए निर्धारित, सुपरस्टार अक्षय कुमार, कृति सेनन और जैकलीन फर्नांडीज अभिनीत साजिद नाडियाडवाला की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्म 'बच्चन पांडे' अब 18 मार्च, 2022 को बड़े पर्दे पर आएगी। नवीनतम विकास के अनुसार, निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर फिल्म के दो नए एक्शन से भरपूर पोस्टर लॉन्च करते हुए होली के शुभ अवसर पर अपनी बहुप्रतीक्षित एक्शन कॉमेडी की नई थिएट्रिकल रिलीज़ की तारीख की घोषणा कर दी है। सुपरस्टार ने भी सोशल मीडिया पर अपने फ़ॉलोअर्स और फैंस के साथ यह खबर शेयर की है। फ़िल्म के एक पोस्टर में अक्षय लोगों के ग्रुप के साथ बंदूक से आकाश में इशारा करते हुए एक ट्रक पर बैठे नज़र आ रहे हैं, वहीं दूसरे में, सुपरस्टार के गले में चैन और हाथ में बंदूकों व हथियारों से भरा बैग देखा जा सकता है। जहां बच्चन पांडे की नई रिलीज डेट इंडस्ट्री के लिए आशीर्वाद के रूप में आई है, खासकर अक्षय कुमार के प्रशंसकों के लिए, फिल्म के नए धमाकेदार पोस्टर ने निश्चित रूप से दर्शकों को अधिक प्रत्याशित कर दिया है।

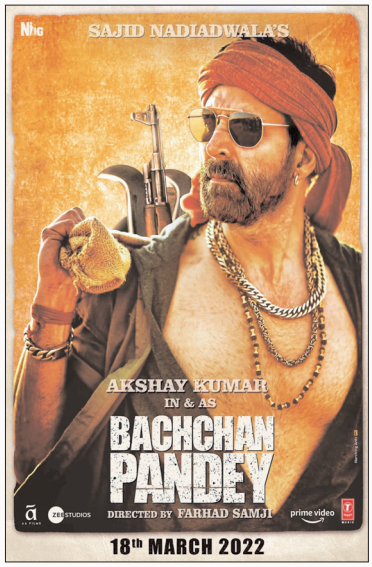

पुष्पा के बाद, अल्लू अर्जुन की अला वैकुंटापुरमुलु का हिंदी वर्शन सिनेमाघरों में होगा रिलीज

अल्लू अर्जुन हाल के दिनों में सबसे चर्चित स्टार्स में से एक है, खासकर पुष्पा : द राइज के बाद से जो दुनिया भर में एक हिट फिल्म बन गई है। पुष्पा की लोकप्रियता और सफलता को देखते हुए, अला वैकुंटापुरमुलु के निर्माताओं ने फिल्म को हिंदी में डब करने का फैसला किया है। त्रिविक्रम श्रीनिवास द्वारा निर्देशित, अल्लू अर्जुन की अला वैकुंटापुरमुलु ने 2020 में सिनेमाघरों में दस्तक दी थी और एक ब्लॉकबस्टर बन गई थी। अला वैकुंठपुरमुलु का कुल कलेक्शन लगभग 160 करोड़ रुपये का है।

साजिद नाडियाडवाला की 'हीरोपंती 2' एक्शन में एक नया बेंचमार्क करेगी स्थापित

पावर प्रोड्यूसर साजिद नाडियाडवाला, निर्देशक अहमद खान और भारत के सबसे कम उम्र के एक्शन हीरो टाइगर श्रॉफ एक्शन एंटरटेनमेंट में समय-समय पर एक अजेय तिकड़ी साबित हुई है। बागी 2 और बागी 3 जैसी फिल्मों के बाद, तीनों अब हीरोपंती 2 के साथ एक्शन में एक नया बेंचमार्क स्थापित करना चाहते हैं। इस बार ब्लॉकबस्टर की अगली कड़ी को एक बड़े बजट में बनाया गया है जिसमें पहले कभी नहीं देखा गया एक्शन देखने मिलेगा। ऐसा सुनने में आ रहा है कि साजिद नाडियाडवाला की हीरोपंती 2 में लेम्बोर्गिनी और फेरारी जैसी लक्जरी स्पोर्ट्स कारों को तोड़ा जाएगा। इन कारों को विस्तृत एक्शन सीन्स के हिस्से के रूप में हवा में उछाला जाएगा।

दर्शक टाइगर श्रॉफ से भी उम्मीद कर सकते हैं कि वह फिल्म के लिए कुछ त्रुटिहीन एक्शन करेंगे जो अपनी पीढ़ी के इकलौते अभिनेता हैं, जिनके पास कई आकर्षक फ्रेंचाइजी हैं। वही आज, अभिनेता ने अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया,

इस तरह के विस्तृत एक्शन सीन्स को निभाना कोई आसान उपलब्धि नहीं थी जिसमें कठिन ट्रेनिंग और प्लानिंग की आवश्यकता थी। हालांकि, टीम के सफल ट्रैक रिकॉर्ड और उनकी एक्शन फ्रेंचाइजी की हर किस्त को देखते हुए, कोई भी कुछ हटकर उम्मीद कर सकता है और हीरोपंती 2 के साथ भी कुछ ऐसा ही होगा।

रोमांटिक एक्शन फिल्म का निर्देशन अहमद खान ने किया है और टाइगर श्रॉफ के अलावा इसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी और तारा सुतारिया भी हैं।

दीपिका पादुकोण स्टारर अमेज़न ऑरिजिनल मूवी 'गहराइयां' का पोस्टर उनके जन्मदिन के अवसर पर रिलीज़ हुआ

अमेज़न प्राइम वीडियो की ओर से आज अमेज़न ऑरिजिनल फ़िल्म, 'गहराइयां' के 6 नए पोस्टर रिलीज़ किए गए, जिसका दर्शकों को लंबे समय से इंतज़ार है। बेहद प्रतिभाशाली निर्देशक, शकुन बत्रा के निर्देशन में बनी इस बहुप्रतीक्षित फ़िल्म में आज के ज़माने के रिश्ते की उलझनों और इसकी अंदरूनी परतों, युवाओं के जीवन के खास पहलुओं, तथा उन्मुक्त होकर अपनी मर्ज़ी से ज़िंदगी बिताने की इच्छा को बखूबी प्रदर्शित किया गया है।

फ़िल्म के मुख्य कलाकार, दीपिका पादुकोण के जन्मदिन के खास मौके पर रिलीज़ किए गए इन नए पोस्टरों के अंतर्गत, सभी किरदारों को अलग-अलग दर्शाने वाले बेहद लुभावने पोस्टर के साथ-साथ दीपिका और सिद्धांत का दिल को छू लेने वाला पोस्टर तथा सभी कलाकारों का सामूहिक पोस्टर शामिल है। फ़िल्म के प्रति उत्सुकता और कुतूहल को बढ़ाने वाले ये सभी पोस्टर, दर्शकों के मन में इस रिलेशनशिप ड्रामा को देखने की लालसा जगाते हैं।

दीपिका पादुकोण ने सबसे पहले अपने सभी फैन्स के लिए इन पोस्टर्स को शेयर किया था। उन्होंने लिखा, आप सभी के भरपूर प्यार के लिए, यह इस ख़ास दिन पर आप सभी के लिए एक ख़ास तोहफ़ा है। इस फ़िल्म में दीपिका पादुकोण, सिद्धांत चतुर्वेदी और अनन्या पांडे प्रमुख भूमिकाओं में नज़र आएंगे, साथ ही धैर्य करवा, नसीरुद्दीन शाह और रजत कपूर ने भी इसमें अहम किरदार निभाए हैं। शकुन बत्रा की जौस्का फ़िल्म्स के सहयोग से धर्मा प्रोडक्शंस और वायकॉम18 स्टूडियोज़ द्वारा साथ मिलकर प्रोड्यूस की गई इस फ़िल्म का एक्सक्लूसिव वर्ल्ड प्रीमियर अब 11 फरवरी, 2022 को होगा, तथा भारत के साथ-साथ दुनिया के 240 देशों के दर्शक अमेज़न प्राइम वीडियो पर इस फ़िल्म का आनंद ले सकेंगे।

बसंत पंचमी
की हार्दिक शुभकामनाएं